अगस्त-२०२२ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ०४ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ मासिक

अगस्त-२०२२

स्वराज्य स्वदेशी और स्वभाषा,
का जिसने सन्देश दिया।
विश्वगुरु है अपना भारत,
आर्यों को सावचेत किया।
मंत्र स्वतंत्रता जिसने फूंका,
क्रान्ति-पथ तैयार किया।
आओ नमन करें उस ऋषि को,
जिसने निज बलिदान दिया।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १५ १३०

स्वाद की दौड़ में, सबसे आगे
MDH
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०
Garam masala
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Shahi Paneer
PEACOCK
KASOORI METHI
Achari Aloo masala
अचारी आलू मसाला
Veg Biryani masala
वेज बिरयानी मसाला
Karahi Paneer masala
कढ़ाही पनीर मसाला
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२२
श्रावण शुक्ल दशमी
विक्रम संवत्
२०७९
दयानन्दाब्द
१९८

August - 2022

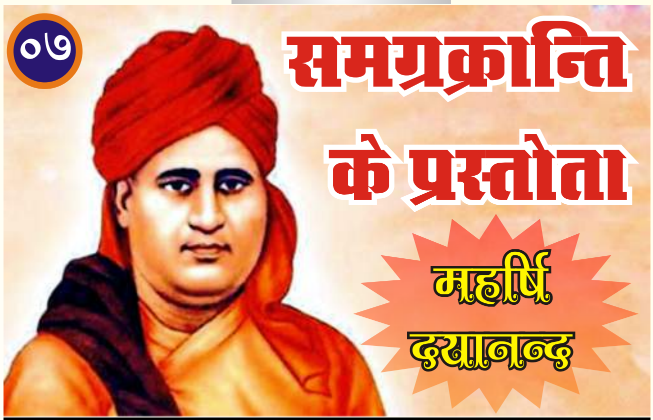

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ मित्र बनें
११	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/२२
१२	न्यास समाचार
१४	आर्य समाज एक आस्तिक संगठन
१५	राष्ट्रवादी दयानन्द
२३	मरा हुआ कौन?
२५	यूएन में शामिल हुई हिन्दी
२६	स्वास्थ्य- पैर हो जाते हैं सुन्न?
२७	कथा सरित- पुरुषार्थ की महत्ता
३०	ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक......

समाचार २८

हलचल २९

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

स्वामी – श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ११ अंक -०४

मुद्रण – द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे।। - ऋग्वेद १०/१८/७, अथर्ववेद १२/२/३१; १८/३/५७

ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में एक मन्त्र आता है जिसमें वैदिक नारी के छः भूषणों का उल्लेख वा वर्णन है। हम इस मन्त्र व इस पर आर्यजगत् के कीर्तिशेष संन्यासी स्वामी विद्यानन्द विदेह जी के पदार्थ व व्याख्या को प्रस्तुत कर रहे हैं। मन्त्र उपर्युक्त है-

पदार्थ- (१) (इमाः नारी) ये नारियाँ, (अविधवाः) अ-विधवा, (सुपत्नीः) सुपत्नियाँ, (अनश्रवः) अनश्रु, (अनमीवाः) नीरोग, (सुरत्नाः) सुरत्ना और (जनयः) जननियाँ हों। (२) ये (आ-अंजनेन सर्पिषा) अंजन और स्नेहन के साथ (अग्रे) पहिले (सं-विशन्तु) प्रवेश करें और (योनिं आ-रोहन्तु) सवारी पर आरोहण करें।

वैदिक नारी के छः भूषण

मन्त्र का भावार्थ एवं व्याख्या करते हुए स्वामी विद्यानन्द विदेह जी ने लिखा है कि इस मन्त्र में जहाँ नारी के लिये षड्-भूषणों का विधान है, वहाँ मानव-समाज के लिये नारी के विषय में दो आदेश हैं।

नारियों का प्रथम भूषण अविधवा होना है। धव नाम पति का है। धवा का अर्थ है पतियुक्ता, पति के साथ रहनेवाली, विधवा

वैदिक नारी के छः भूषण

का अर्थ है पतिवियुक्ता, पति से पृथक् रहने वाली। अविधवा का अर्थ है पति से पृथक् न रहनेवाली, सदा पति के साथ रहने वाली। सच्ची नारियाँ स्वप्न में भी कभी पति से वियुक्त होना नहीं चाहतीं। रण में, वन में, नगर में, नारियाँ सदा पति के साथ रहें, सुख में, दुःख में सदा अपने पति का साथ दें।

नारियों का दूसरा भूषण है सुपत्नी होना। पत्नी का अर्थ है स्वामिनी और सुपत्नी का अर्थ है सुस्वामिनी। नारियों को उच्च कोटि की सुस्वामिनी तथा उच्च कोटि की सुगृहप्रबन्धिका होना चाहिये। जहाँ नारियाँ सुगृहस्वामिनी और सुगृहिणी होती हैं, वहाँ श्री तथा लक्ष्मी का निवास होता है और उन घरों में देवता रमण करते हैं। सुपत्नीत्व नारी की परम प्रतिष्ठा है।

नारियों का तीसरा भूषण है अनश्रु होना, अश्रुविहीना होना, कभी अश्रु न बहाना, सदा सुप्रसन्न रहना। वियोग वा करुणा के अवसरों पर मनुष्य ही क्या, पशु-पक्षी तक की आँखों में आँसू आ जाते हैं। किन्तु बात-बात पर आँसू बहाने का स्वभाव अच्छा नहीं, बहुत बुरा है। साथ ही पुरुषों का भी यह कर्तव्य है कि वे ठेस या पीड़ा पहुँचाकर स्त्रियों को रुलाया न करें। जहाँ नारियाँ दुःखी होकर आँसू बहाती हैं, वहाँ सब प्रकार की आपत्तियाँ आकर निवास करती हैं। देवियाँ सदा सुप्रसन्न रहें। सुप्रसन्नता

सर्वश्रेष्ठ सुलक्षण है।

नारियों का चौथा भूषण है नीरोगिता। स्त्रियों को आयुर्वेद का अध्ययन कराके स्वास्थ्य विज्ञान की जानकारी अवश्य करायी जानी चाहिये, जिससे वे अपना और अपने परिवार का स्वास्थ्य सम्पादन कर सकें। जो देवियाँ रुग्ण रहती हैं, वे न तो पारिवारिक कर्तव्यों को सुष्ठुतया निर्वाह कर सकती हैं, न अपने परिवार को स्वस्थ व नीरोग रख सकती हैं और न देश और संसार की ही कुछ सेवा कर सकती हैं। अस्वस्थता से जहाँ आयु और धन की हानि होती है, वहाँ सुख और सौन्दर्य का भी ह्रास होता है। स्वस्थ शरीर से ही सब धर्मों (कर्तव्यों) की साधना होती है।

नारियों का पाँचवां भूषण है सुरत्ना होना। उत्तम गुण का नाम सुरत्न है। नारियों में उत्तमोत्तम गुण होने चाहिये। विद्या सुरत्न है। सुशिक्षा सुरत्न है। मधुरता सुरत्न है। सुशीलता सुरत्न है। सदाचार सुरत्न है। पवित्रता सुरत्न है। सौन्दर्य सुरत्न है। जितनी रमणीयतायें हैं, सब सुरत्न हैं। देवियों को चाहिये उत्तमोत्तम गुणों से सुरत्ना बनें।

नारियों का छठा गुण है जननी अथवा माता बनना। यह ठीक है कि अधिक सन्तान का होना आपत्तिपूर्ण होता है, किन्तु सर्वथा निस्सन्तान होना भी पाप है। पति स्त्री की शीतल छाया है और सुसन्तान नारी की माया है। धन होने पर भी सन्तान के बिना नारी निर्धना है। मातृत्व नारी का परम पद है। स्मरण रहे कि कुसन्तान की माता बनना दारुण दुर्भाग्य है और सुसन्तान की माता होना महान् गौरव है।

सामाजिक व्यवहार में वेदमाता नारियों के लिये अतिशय उच्च समादर का विधान करती है। प्रत्येक परिवार की देवियाँ अंजन और स्नेहन से सुशोभनीय रहें। देवियाँ सुन्दर वस्त्र, शोभनीय आभूषण, अंजन (सुरमा, काजल, मेंहदी, सिन्दूर आदि) और स्नेहन (तैल आदि स्निग्ध पदार्थ) का उपयोग करें। विशेषतया जब वे सार्वजनिक आयोजनों में जायें तो उनकी वेशभूषा तथा रूपनीयता सुदर्शनीय हो।

गृहों, सभाओं अथवा उत्सवों में प्रथम देवियाँ प्रवेश करें और पुरुष उनके पीछे। इसी प्रकार सवारियों पर प्रथम नारियाँ आरोहण करें और पुरुष पीछे।

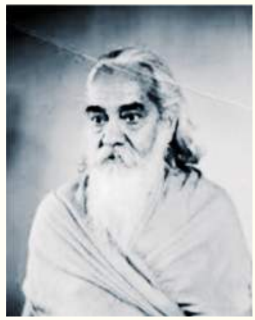

ये नारियाँ हो अविधवासुपत्नी, अनश्रु नीरोग सुरत्ना जननी।
अंजन स्नेहन से हों सुश्रृंगारित, करें प्रथम प्रवेश यानों पर चढ़ें।।

हमने उपर्युक्त वेदमन्त्र, उसका पदार्थ व टीका स्वामी विद्यानन्द विदेह जी की लघु पुस्तक 'वैदिक स्त्री-शिक्षा' से दी है।

वैदिक स्त्री-शिक्षा पुस्तक में कुल ११ वेदमन्त्रों की व्याख्यान की गई है। इन मन्त्रों के शीर्षक निम्न दिये गये हैं-

१. षड्-भूषण, २. स्त्री का मन व क्रतु, ३. पाणि-ग्रहण, ४. सहचारिणी जाया, ५. सम्राज्ञी, ६. पत्नी के वस्त्रों का अप्रयोग, ७. धर्मशिला नारियाँ, ८. सुमंगली वधू, ९. सदाचारिणी भार्या, १०. देवपत्नियाँ, ११. सुकुशला राका

हमें लगता है कि यह पुस्तक सभी नारियों वा स्त्रियों को पढ़नी चाहिये।

लेखक- स्वामी विद्यानन्द विदेह
प्रस्तुति- मनमोहन कुमार आर्य

।।।।

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है।सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है।इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है। वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है।परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर
बैंक एकाउन्ट का विवरण :
AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001
में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

श्री दीपेश खत्री
दिल्ली

श्रीमती बेला भाटिया
पानीपत

श्रीमती सुषमा आर्या
पानीपत

श्रीमती कमलेश–राजेन्द्र आर्य
पानीपत

श्री संजय शांडिल्य
उदयपुर

श्री अतुल शांडिल्य
उदयपुर

श्री भँवर लाल आर्य
उदयपुर

श्री मनोज गुलाटी
दिल्ली

आत्म निवेदन

समग्रक्रान्ति के प्रस्तोता महर्षि दयानन्द

इस आलेख की एक एक पंक्ति लिखते समय मन पीड़ा से आप्लावित है। जिस महानात्मा ने बार-बार विष का सेवन करके भी भारत माता को हर प्रकार की परतंत्रता से मुक्त कराने का भागीरथ प्रयास किया और इस प्रयत्न में अपना बलिदान भी दे दिया, आज जब भारत की स्वतंत्रता के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर अनेकानेक कार्यक्रमों की शृंखला का आयोजन किया जा रहा है, वहाँ स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा का सर्वप्रथम सन्देश देने वाले महामना को जो स्थान मिलना चाहिए था वह नहीं मिल सका। इसमें उनके शिष्य कहलाने वाले हम आर्यों का ही दोष है जो महर्षि के अप्रतिम योगदान को देशवासियों के समक्ष अंकित करने में असफल रहे। १८७५ में जब कांगेस का जन्म अभी भविष्य के गर्भ में था, जिसने यह पंक्ति लिखी उसे आप क्या कहेंगे- 'जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गो आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं तब से क्रमशः आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती है।' पाठक निष्पक्ष होकर विचार करें कि क्या ऐसा कहने का, लिखने का साहस तत्कालीन अन्य किसी व्यक्ति में था?

तत्कालीन भारत में जब १८५७ के दमनचक्र के पश्चात् शासकों के विरोध की भावना ही जैसे समाप्त हो गयी थी, तब ऐसे साहस पूर्ण वचन और ऐसे ही उपदेश करने वाले महात्मा को आप क्या कहेंगे? निश्चित ही भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का ध्वज वाहक।

अंग्रेजी शासन से मुक्ति प्राप्त करने हेतु सन् १८५७ में भारत का प्रथम स्वतंत्रता युद्ध लड़ा गया। दावा किया जाता है कि इस स्वातंत्र्य ज्योति के प्रज्ज्वलन में तथा इसे जगह-जगह पहुँचाने में तत्कालीन साधु-संन्यासियों का बहुत बड़ा योगदान था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी सन् १८५७ के स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया था, ऐसा कुछ इतिहासकारों का मानना है। उनका कहना है कि स्वामी जी ने न केवल भाग लिया वरन् वे इस आन्दोलन के प्रमुख व्यक्ति थे। इन इतिहासकारों ने इसके प्रमाण भी प्रस्तुत किये हैं। परन्तु आर्यसमाज के प्रायः सभी इतिहासकारों ने इससे सहमति नहीं जतायी। पर इस बिन्दु पर एक बात अवश्य कसकती है कि आर्यसमाज के इतिहासकारों ने इस बात पर उस गहनता से शोध नहीं किया कि मथुरा पहुँचने से पूर्व इसी कालखण्ड में स्वामी जी की क्या गतिविधियाँ थीं? उनके जीवन का यह हिस्सा आज भी अज्ञात क्यों है? सोचिये कि अगर यह बात किसी अंश तक भी शोध कार्य में सामने आती कि स्वामी जी १८५७ की क्रान्ति से किसी प्रकार सम्बद्ध थे तो स्वामी जी का देश में क्या स्थान होता? और क्या इस अज्ञातवास के इस कालखण्ड में झांकना उनके शिष्य इतिहासकारों के लिए आवश्यक नहीं था?

यहाँ हम यह स्पष्ट कर दें कि चाहे १८५७ की उनकी गतिविधियाँ अज्ञात हैं फिर भी इसमें लेशमात्र भी सन्देह की गुंजाईश नहीं है कि आगे चलकर स्वामी जी ने जो कुछ कहा व किया उस प्रत्येक कार्य में, भारत माँ को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करने की अभिलाषा इतनी प्रबल थी, माना ही नहीं जा सकता कि ऐसा व्यक्ति १८५७ में अक्रिय रहा हो। स्वामी जी के समाज सुधार

के सभी कार्यक्रमों, धर्म के सत्य स्वरूप की स्थापना, वेद मत को अपनाने का आग्रह, भारत के प्राचीन गौरव तथा स्वाभिमान की ओर भारतीयों का ध्यानाकर्षण, आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य के सुदीर्घ इतिहास की सर्वत्र चर्चा, सृष्टि के आरम्भ से ही आर्यों द्वारा आर्यावर्त्त की स्थापना तथा आर्य भारत के मूल निवासी होने का सिद्धान्त और अपनी दैनिंदिन प्रार्थना में भी प्रभु से स्वराज्य की प्रार्थना (महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ आर्याभिविनिय में लिखा है- 'अन्य देशवासी राजा हमारे देश में न हों, हम लोग पराधीन कभी न रहे।') और स्वराज्य को सर्वोपरि उत्तम घोषित करना, गौकृष्यादि रक्षिणी सभा की स्थापना आदि-आदि, इन सब कार्यों के पीछे और इन सबको साधन मानते हुए इनका लक्ष्य भारत की स्वतंत्रता ही था।

स्वामी दयानन्द केवल राजनीतिक ही नहीं समग्र क्रान्ति और सर्वसुधारों के जनक थे। तर्काधारित चिन्तन की बात भारतीय संविधान में तो लगभग १०० वर्ष बाद लिखी गयी दयानन्द ने तत्कालीन भारत में इसकी सर्वविध आवश्यकता को भलीभाँति जान लिया था इसलिए उन्होंने 'बाबा वाक्य प्रमाणं' के उन्मूलन का उद्‌घोष किया। इसके बिना दयानन्द की इच्छित समग्र क्रान्ति सम्भव नहीं थी। अतः जीवन भर स्वामी जी इसके लिए प्रयास करते रहे। उनका स्पष्ट मत था कि भारतीय समाज में जो अविद्या और अन्धकार ने पैर पसारा है यह सदा से नहीं था। यह अत्यन्त अर्वाचीन है और भारत में ऐसी मूर्खता से युक्त व्यवस्थाओं को कभी सम्मान नहीं मिला। अतःउन्होंने परमपिता परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद, ऋषियों की सुविचारित मानव हितैषी मान्यताओं, भारत के प्राचीन गौरवमयी इतिहास के महत्व की स्थापना तथा प्राकृतिक न्याय के सहज सिद्धांतों के आधार पर समस्त अमानवीय, द्वेष-विस्तारक मान्यताओं का पुरजोर सफल खंडन किया, जिनके रहते कोई स्वराज्य कभी सुराज्य नहीं बन सकता है। हम स्वामीजी को समग्र क्रान्ति के जनक इसलिए कहते हैं कि मनुष्य मात्र की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय उन्नति पर उनकी दृष्टि एक साथ थी। वह प्रत्येक क्षेत्र में मानव को स्वतन्त्र, स्वाधीन तथा उन्नत देखना चाहते थे। यही नहीं वे केवल लौकिक उन्नति पर ही नहीं रुक जाते हैं वरन् मनुष्य जीवन के अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की साधना का मार्ग दिखाना वे कभी नहीं भूलते। उनके महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में आप इस सब के प्रमाण एक साथ देख सकते हैं।

स्वामी दयानन्द बालक मूल शंकर के रूप में दो उद्देश्यों को लेकर गृह-त्याग करते हैं। प्रथम सच्चे शिव की खोज और द्वितीय

मृत्यु पर विजय। और उनके जीवन का अध्ययन बताता है कि उन्हें ये दोनों लक्ष्य सिद्ध हो चुके थे। उन्हें लोक कल्याण के क्षेत्र में उतरने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं थी। परन्तु जब उन्होंने एक ओर अमानवीय मान्यताओं के बोझ तले सिसकती मानवता को देखा, भारत के स्वर्णिम गौरव को धूल धूसरित होते देखा, ऋषियों की सन्तानों को तथाकथित पंडितों द्वारा निर्मित बुद्धिविरुद्ध पतन के मार्ग पर ले जाने वाली प्रथाओं में पिसते देखा, सहस्र वर्ष की पराधीनता के काल में विश्वगुरु के स्थान पर अभिषिक्त राम और कृष्ण के वंशजों को अपने गौरव को विस्मृति के गर्त में डालकर सहज भाव से उसी को अपनी कि वे अपने मोक्ष की चिन्ता नहीं कर सकते, आर्यावर्त्त के प्राचीन गौरव की स्थापना ही उनका परम लक्ष्य है। विगत ५ सहस्र वर्ष में योगिराज कृष्ण के पश्चात् अगर आर्यावर्त्त की श्रेष्ठता की चिन्ता कर और उसे पुनर्स्थापित करने के दृढ निश्चय के साथ किसी ने अपने कर्तव्य का निर्धारण किया तो वे अकेले महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे।

उनके लिखे और कहे का अवलोकन कीजिए। सर्वत्र प्राचीन भारत पर गौरवान्वित संन्यासी के दर्शन आपको होंगे। सहस्रों उद्धरणों में से एक प्रस्तुत है- सत्यार्थ प्रकाश के ११वें समुल्लास में ऋषि लिखते हैं कि- 'यह आर्यावर्त्त देश ऐसा देश है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसीलिये इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिये सृष्टि की आदि में आर्य लोग इसी देश में आकर बसे। इसलिए हम सृष्टिविषय में कह आये हैं कि आर्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्यों से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है वह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिस को लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।'

पाश्चात्यों के विद्याभिमान पर कुठाराघात करते हुए वे आगे लिखते हैं- 'जितनी विद्या भूगोल में फैली है वह सब आर्यावर्त्त देश

से मिश्र वालों, उन से यूनानी, उन से रूम और उन से यूरोप देश में, उन से अमेरिका आदि देशों में फैली है।'

स्वामी जी यह बात १८८२ में लिख रहे हैं जिसमें उन गौरांग प्रभुओं के मुँह पर करारा थप्पड़ है जो पाश्चात्य विद्या और सभ्यता को सर्वश्रेष्ठ घोषित करने के षड्यंत्र के तहत वेद को गड़रियों के गीत घोषित करना आवश्यक मान, ऐसा कर रहे थे। वे यह स्थापित करने में लगे थे कि वेदों में ऐसी ऊलजलूल बातें हैं जिनको पढ़कर लन्दन के विद्यार्थी हसेंगे। ऐसे समय में, जब यह सब सुनके भारत के सारे महापुरुष और श्रेयाकांक्षी नेतागण गौरांग प्रभुओं के मानसिक दास बन मूक अथवा प्रखर समर्थन करते हुए निद्रा की गोद में आनन्द ले रहे थे, दयानन्द ने घोषित किया कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनना सब आर्यों का परम धर्म हैं।' दयानन्द जानते थे कि अंग्रेजों की समस्त मक्कारियों का एक ही उत्तर है और वह है वेद और वेद की शिक्षाओं का अवलम्बन। भारत की स्वतंत्रता और श्रेष्ठतम स्वराज्य की स्थापना का एक ही मार्ग है और वह वैदिक शिक्षाओं पर आधारित है इसलिए उनका नारा था वेदों की ओर लौटो।

वस्तुतः महर्षि इस मनोविज्ञान से भलीभाँति परिचित थे कि जब तक किसी जाति में दैन्यभाव उपस्थित रहता है उससे किसी क्रान्ति की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अंग्रेजों ने यही किया। भारतीयों के मन में अंग्रेजों की श्रेष्ठता और भारतीयों की विद्याहीनता को लेकर ऐसे दृढ भाव भर दिए थे कि साधारण लोगों की बात तो क्या कहें भारत के तत्कालीन नेतागण भी इसको आकण्ठ स्वीकार कर चुके थे। ऐसे लोग स्वतंत्रता के लिए स्वामी दयानन्द के सामान हुंकार कैसे भर सकते थे? हाँ मिमिया सकते थे और दया की भीख मांग सकते थे, जो कि वे नेतागण वस्तुतः कर रहे थे।

अंग्रजों की भारतीयों को लूटने और दुःख देने की सभी कोशिशों पर दयानन्द की पैनी दृष्टि थी। महंगे स्टाम्प, जंगलात की लकड़ियों पर और नमक जैसी आवश्यक वस्तुओं पर कर के बारे में स्वामी जी अनजान नहीं थे। वे १८७४ में ही सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में लिखते हैं - नोंन के बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं, किन्तु नोंन सबको आवश्यक है। वे मेहनत मजदूरी करके जैसे-तैसे निर्वाह करते हैं, उसके ऊपर भी नोंन का 'कर' दण्ड तुल्य ही है। इससे दरिद्रों को बड़ा क्लेश पहुँचता है, ... लवणादि के ऊपर (कर) न चाहिए।'

इसी प्रकार 'पौन' पर कर के बारे में लिखते हैं- पौन रोटी से भी गरीब लोगों को बहुत क्लेश रहता है। क्योंकि गरीब लोग कहीं से घास छेदन करके ले आये वा लकड़ी का भार, उनके ऊपर कौड़ियों के लगाने से उनको अवश्य क्लेश होता होगा। इससे पौन रोटी का जो कर स्थापन करना सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं।'

इसी प्रकार स्टाम्प ड्यूटी के बारे में लिखा है- 'और सरकार कागज को बेचती है और बहुत सा कागजों पर धन बढ़ा दिया है। इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुँचता है सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं ....' (सभी उद्धरण सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण ११ समु. से) ध्यातव्य है कि नमक आन्दोलन के प्रणेता समझे जाने वाले मोहनदास करमचन्द उस समय मात्र ६ वर्ष के बालक ही थे।

अब स्वराज्य व स्वदेशी की बात भी कर लें।

१८५७ की क्रान्ति को कुचलने के पश्चात् अंग्रेज अफसरों ने भारतीयों पर जो जुल्म किये उन्हें पढ़कर आत्मा काँप जाती है। ब्रिटिश राज्य से भी यह बात छुपी नहीं रही। तब सिर्फ वाग्जाल बुनते हुए महारानी विक्टोरिया ने घोषणा की जिसका आशय था कि वह भारतीयों को धार्मिक या अन्य प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

इसका उत्तर देते हुए, उस समय जब कि अंग्रेजों के विरुद्ध बोलने में अच्छे अच्छों का नाड़ा ढीला होता था, स्वामी दयानन्द ने निर्भीकता के साथ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा- 'मतमतान्तरों के आग्रह से रहित, अपने-पराए का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज पूर्ण सुखदायक नहीं है।' भारत के नौनिहालों को यह ध्यान रखना चाहए कि कांग्रेस की १८७५ में स्थापना के १० वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द ने यह बात लिखी थी। स्वराज्य का सम्पूर्ण श्रेय लेने वाली कांग्रेस के नेतागण अपनी स्थापना के कई दशक तक किस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य की स्तुति करते थे, स्थानाभाव के कारण हम यहाँ नहीं लिख रहे।

स्वाधीन भारत की आधारशिला रखने के लिए भारत में स्वदेशी प्रचार, विदेशी वस्तुओं का

बहिष्कार, अछूतों को गले लगाने का प्रचार, गोरक्षा, शिक्षा-प्रसार, स्त्रीशिक्षा, विधवा उद्धार आदि क्रान्तिकारी आवश्यक कार्यों का सूत्रपात महर्षि दयानन्द ने किया। यहाँ हम कुछ मनीषियों के कथन उद्धृत करना समीचीन समझते हैं जिनसे दयानन्द के राष्ट्रवादी स्वरूप का प्रत्यक्ष हो सकेगा-

एनी बीसेंट (India a nation) में लिखती हैं- 'स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सर्वप्रथम 'भारत भारतवासियों के लिए' का उद्घोष किया।

ग्राहम जे रीड लिखते हैं- 'वे उन दिनों के देशभक्त थे जब देशभक्ति शब्द का प्रचलन नहीं हुआ था। कांग्रेस की स्थापना के पहले के वे हिन्दू राष्ट्रवादी थे। वे एक ऐसे भारत की कल्पना करते थे जो सब बुराइयों से मुक्त होगा और १८५७ की घटनाओं के बाद स्वयं के निर्णयों पर चलेगा।'

'सचमुच वे भारतीयों के बीच विशिष्ट भारतीय थे और उन्होंने 'भारत भारतीयों के लिए' की इच्च्छा स्वयं में जगायी थी।

कविवर आरसी प्रसाद सिंह ने सत्य ही लिखा है-

जब स्वदेशी शब्द दर्शन-योग्य केवल कोष में था,
और हर पुरुषार्थ का अवसान चिर संतोष में था।
शान्त शीतल हो चुकी थी जब तरुण विद्रोह ज्वाला,
जब विदेशी राजसत्ता-कण्ठ में थी विजय माला।
दिव्य अपराजेय भारत-शक्ति ने तब जो पुकारा,
युग-प्रवर्तक, प्रथम निस्सन्देह वह स्वर था तुम्हारा।।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वदेशी की अवधारणा का श्रेय भी इसी वीतराग संन्यासी को जाता है। वे भारत में, व्यापार के क्षेत्र में अंग्रेज जैसे विदेशियों की भूमिका अवांछित व भारत की बदहाली का मुख्य कारण मानते थे। उनके समक्ष भारत की समृद्धि का इतिहास उपस्थित था जब विश्व भर में भारतीय व्यापारी तथा सामान की तूती बोलती थी। सात समन्दर पार जाने वाले भारतीयों में धर्म के नाम पर ऐसी स्थापना कि 'जो समुद्र पार गया उसका जानो धर्म भ्रष्ट हो गया' जिन लोगों की भी करतूत हो पर धर्म भ्रष्ट होने के भय से आर्यों के वंशजों का व्यापारिक साम्राज्य नष्ट हो गया। उस पर गुलामी की मार। देशी का स्थान विदेशी ने इस तरह ले लिया जैसे कि उसका नैसर्गिक अधिकार हो। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द धर्मभ्रष्ट हो जाने की बात का स्पष्ट खण्डन करते हुए लिखते हैं- 'जो मनुष्य देशदेशान्तर और द्वीपद्वीपान्तर में जाने आने में शंका नहीं करते वे देशदेशान्तर के अनेकविध मनुष्यों के समागम, रीति भाँति देखने, अपना राज्य और व्यवहार बढ़ाने से निर्भय शूरवीर होने लगते और अच्छे व्यवहार का ग्रहण बुरी बातों के छोड़ने में तत्पर होके बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं। इसी प्रकरण में महर्षि स्वदेशी के बीज का वपन कर देते हैं। वे लिखते हैं- 'क्या विना देशदेशान्तर और द्वीपद्वीपान्तर में राज्य वा व्यापार किये स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? जब स्वदेश ही में स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश में व्यवहार वा राज्य करें तो विना दारिद्रय और दुःख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता।' यहाँ अगर हम इस बिन्दु पर दयानन्द की पीड़ा और तर्क को समझ सकें तो स्वदेशी की उनकी प्रबल कामना स्पष्ट हो जायेगी।

अब स्वभाषा की बात भी कर लें। भाषा की एकता राष्ट्रीय एकता की जनक है इस बात को समझते हुए संस्कृत के महान् पंडित आचार्य दयानन्द ने अपने सर्व प्रमुख ग्रन्थ संस्कृत में अथवा अपनी मातृभाषा गुजराती में न लिखकर जनभाषा हिन्दी में लिखे। यही नहीं अपने व्याख्यान संस्कृत में देना छोड़कर हिन्दी में देने प्रारम्भ कर दिए, जिसे वे 'आर्य भाषा' के नाम से लिखते हैं। भाषा की पृथकता देश में विभाजनकारी हो सकती है यह दयानन्द ने काफी पहले समझ लिया था, परन्तु अंग्रेजी, अंग्रेज तथा अंग्रेजियत को श्रेष्ठ मानने वाले हमारे अन्य नेता इस तथ्य की अवहेलना करते रहे, नतीजा यह हुआ कि प्रान्तों का विभाजन भाषा के आधार पर हुआ और आज भी यह समस्या भारतीयों में कड़वाहट पैदा किये हुए है। यह स्वामी दयानन्द की बात न मानने का परिणाम है।

महर्षि दयानन्द के राष्ट्रीय विचारों के महत्व को अंग्रेज बहुत गहराई से अनुभव करते थे।

सन् १९११ की जनगणना के अध्यक्ष मि. ब्लंट लिखते हैं- 'दयानन्द मात्र धार्मिक सुधारक नहीं थे, वह एक महान् देशभक्त थे। यह कहना अधिक ठीक होगा कि उनके लिए धार्मिक सुधार राष्ट्रीय सुधार का ही एक उपाय था।' एक अन्य स्थान पर ये ही ब्लंट लिखते हैं- 'आर्य समाज के सिद्धान्तों में देशप्रेम की प्रेरणा है। आर्य सिद्धान्त और आर्य शिक्षा समान रूप से भारत के

प्राचीन गौरव के गीत गाते हैं। ऐसा करके वे अपने अनुयायियों में राष्ट्र के प्राचीन गौरव की भावना भरते हैं।'

सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि दयानन्द से प्रेरणा प्राप्त कर असंख्य जन स्वातन्त्र्य संग्राम में कूद पड़े थे। अगर इनमें से प्रमुख व्यक्तियों के नाम भर भी लिखे जायं तो भी एक पृथक् आलेख की आवश्यकता होगी। स्वतंत्रता के ७५वें वर्ष में हम स्वातन्त्र्य भावों के प्रणेता युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धा सहित स्मरण करते हुए, नमन करते हुए, यह अवश्य कहना चाहेंगे कि आज भारत राजनैतिक रूप से अवश्य स्वतन्त्र हो गया है परन्तु राष्ट्रीय चेतना आज भी शैशव काल में खड़ी अपने को पल्लवित और पुष्पित करने के लिए ऋषिवर आपकी ही बाट जोह रही है।

कविवर आरसी प्रसाद सिंह यही लिखते हैं-

हे विमल स्वामी, परम तत्वज्ञ मुनि, ब्रह्मात्मज्ञानी,
आर्य संन्यासी, सुधारक, गुरु दयानान्दाभिमानी।
राजनीतिक दासता से मुक्त हैं भारत निवासी,
चेतना राष्ट्रीय लेकिन आज भी है देवदासी।
स्वप्न भारत भारती का है अधूरा ही हमारा,
देश के सर पर चढ़ा है आज भी ऋषि ऋण तुम्हारा।।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

19 August

इस न्यास के न्यासी, सौम्य, मधुर स्वभाव व उदार प्रवृत्ति के स्वामी श्री शुद्धबोध जी शर्मा को उनके जन्मदिवस के पावन अवसर पर न्यास के सभी न्यासियों, अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं की ओर से ढेरों बधाईयाँ।

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०६/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	१ यो	१	■	२	२ रा	२	२ ण	■	■
३ दा	३	३	३ च	३	■	■	४	४ वा	४
■	५	५ ली	■	६	६	६ स	६	६ ज	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. सहजानन्द का जन्म जिस ग्राम में हुआ था वह किस नगर के समीप था?

२. सहजानन्द को किसका अवतार बताया गया?

३. स्वामीनारायण मत का प्रचार एक बड़े भूमिका द्वारा सम्भव हो सका। उसका क्या नाम था?

४. नाककटे सम्प्रदाय की कथा में सत्याचरण से उनकी पोल खोलने वाला अधिकारी राज्य के किस पद पर आसीन था?

५. माध्व मत वाले कपाल में किस रंग की रेखा लगाते हैं?

६. किस मत की पुस्तकों में मूसा को साधुओं के रूप में स्वीकार किया है?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ सितम्बर २०२२

पूज्य स्वामी तत्वबोध सरस्वती स्मृति समारोह

न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

दिनांक २४ जुलाई, दिन रविवार नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर में न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध जी

सरस्वती की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि उदयपुर नगर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री जितेन्द्र तायलिया थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि न्यास के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती, जो कि दीक्षा लेने से पूर्व उदयपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री हनुमान प्रसाद जी चौधरी थे, ने न्यास की स्थापना तथा उसे एक सुन्दर भवन का रूप देने के लिए सर्वस्व अर्पित किया। स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती में दानशीलता इस प्रकार की थी कि उन्हें आर्य समाज का भामाशाह कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती ने श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के उत्थान के लिए खाली चैक हस्ताक्षर कर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भैरोसिंह जी शेखावत को प्रस्तुत कर दिया और कहा कि आप जो चाहे वह रकम इसमें भर लें। ऐसे महामना दानवीर आर्य समाज के लिए ही नहीं बल्कि देश के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। स्वामी जी में दानशीलता के अतिरिक्त देशभक्ति भी कूट-कूट कर भरी हुई थी। इन्हें स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन में जेल तक जाना पड़ा था।

सभा को सम्बोधित करते हुए प्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं जल संरक्षण के आन्दोलन को विस्तार देने वाले डॉ. पी सी जैन ने कहा कि आर्य समाज नारी शिक्षा, विधवा विवाह, छूआछूत उन्मूलन, गौ रक्षा के अतिरिक्त पर्यावरण संरक्षण के प्रति भी समर्पित रहा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश न्यास की रचना उदयपुर के नवलखा महल में की थी जिसको भव्य भवन के रूप में स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती ने स्थापित किया और उनके कार्य को आगे बढ़ाते हुए न्यास के

वर्तमान अध्यक्ष श्री अशोक आर्य और उनकी टीम ने आज न्यास को विश्व पटल पर ख्याति दिलवाई है। न्यास में १६ संस्कारों से युक्त संस्कार वीथिका का निर्माण विश्व की भव्यतम कृति है जहाँ जीवन्त रूप में संस्कारों को वर्णित किया गया है। इस प्रकार का आकर्षण विश्व में कहीं नहीं है साथ ही न्यास सामाजिक, शैक्षिक एवं वैदिक शिक्षाओं के प्रचार प्रसार के लिए निरन्तर कार्य कर रहा है इसके लिए मैं श्री अशोक आर्य जी को बधाई देता हूँ और न्यास के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

इससे पूर्व स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि युग प्रवर्तक महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने नवलखा महल, उदयपुर में, जो कि उस समय के महाराणा सज्जन सिंह जी का राजकीय अतिथि गृह था, लगभग साढ़े छह मास निवास किया तथा अन्य अनेकों कार्यों के साथ सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य के रूप में अपनी कालजयी कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन को सम्पूर्ण किया। इस प्रकार यह नवलखा महल ऐतिहासिकता और सांस्कृतिक परिदृश्य में अमूल्य स्थान रखता है। कालान्तर में यह इमारत राजस्थान सरकार के पास आ गई और जर्जर भी हो चुकी थी, ऐसे समय में आर्य

समाज के प्रमुखजनों की मांग पर १९९२ में यह स्थल आर्यों का सौंपा गया जिसका संचालन श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास कर रहा है और विश्व पटल पर अपनी ख्याति स्थापित कर चुका है।

कार्यक्रम में न्यास के मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि हमें स्वामी जी से प्रेरणा लेते हुए अपनी

श्रद्धानुसार अपनी अर्थाहुति न्यास को समर्पित करनी चाहिए जिससे न्यास के कार्यों को गति मिल सके यही स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने कहा कि जिस दान और परिश्रम से स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती ने न्यास को खड़ा किया और इसको भव्य बनाने में श्री अशोक आर्य जी और उनकी टीम सराहनीय कार्य कर रही है उसमें हम सभी की सहभागिता अपनी श्रद्धानुसार रहे तो हम स्वामी जी को सच्ची श्रद्धांजलि दे पायेंगे।

न्यास के कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल मित्तल ने कहा कि बिना अर्थ के कोई भी कार्य आगे नहीं बढ़ सकता इसलिए सभी से आह्वान किया कि वे अपना अर्थ सहयोग न्यास को प्रदान करें ताकि विश्व पटल पर न्यास अपनी प्रतिष्ठा कायम रख सकें।

इस अवसर पर आर्य समाज हिरण मगरी की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा एवं अन्यों ने पूज्य स्वामी तत्वबोध जी सरस्वती के सन्दर्भ में अपने अपने संस्मरण प्रस्तुत किए और उनके महान् व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए आर्यजनों को संकल्पित होने का आह्वान किया कि हम जीवन भर वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में रत रहें, यही हमारा कर्तव्य है, यही उस महान् आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमान् जितेन्द्र जी तायलिया जी ने न्यास स्थित यज्ञशाला का भव्य, सुन्दरतम गेट बनाने की योजना को अपने पूज्य पिताजी श्रीमान् विजय लाल जी तायलिया की पुण्य स्मृति में, उनके यज्ञीय जीवन की सुगन्ध को प्रेरणा का स्रोत एवं चिर स्थाई बनाने हेतु अर्थ सहयोग देने की सहमति प्रदान की है, इसके लिए न्यास की ओर से उनको बहुत-बहुत धन्यवाद।

कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री इन्द्रप्रकाश यादव के पौरोहित्य में यज्ञ से हुआ। श्री इन्द्रदेव जी पीयूष ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। उदयपुर आर्यजनों के अतिरिक्त न्यास के श्री भंवर लाल गर्ग, श्री देवीलाल पारगी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। सभा का संचालन श्री संजय शाण्डिल्य ने किया तथा धन्यवाद जन सम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़ ने किया।

- भंवर लाल गर्ग, कार्यालय मंत्री

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

मैं बहादुर सिंह जो उदयपुर में कई वर्षों से रह रहा हूँ। लेकिन असली ज्ञान का अनुभव आज किया है। मैं सभी से आग्रह करूँगा कि हर भारतीय नागरिक को इस नवलखा महल को एक बार अवश्य विजिट करना चाहिए। यहाँ के गाईड एवं समस्त कार्यकर्त्ता बहुत ही अच्छे एवं समझदारी से पेश आते हैं। धन्यवाद

मुझे यहाँ आकर अत्यन्त आनन्द का अनुभव हुआ। मैंने यहाँ आकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के बारे में अलौकिक ज्ञान प्राप्त किया। मैं स्वामी जी के जीवन परिचय यथा सन्यासी जीवन, वैदिक ज्ञान, संसार को मार्ग प्रशस्त करने वाली ज्ञानप्रद विद्या से बहुत प्रभावित हुआ। ऐसे महान् आत्मा महापुरुष को मेरा शत-शत नमन है।

- सुरेश कुमार सैन, जालोर

झीलों की नगरी उदयपुर के सुरम्य वातावरण गुलाब बाग के बिल्कुल बीचो-बीच यह स्थान जहाँ दयानन्द सरस्वती जी का अद्‌भुत पूर्ण ज्ञान प्रदान किया जाता है इसे देखकर मन प्रफुल्लित हो गया है। सत्यार्थ प्रकाश और सनातन धर्म में रुचि और बढ़ गई है। यह ज्ञान हमारे विद्यालय में भी प्रयुक्त किया जाना चाहिए। इस ज्ञान को सभी तक पहुँचाना चाहिए।

- मयंक शुक्ल, मुरादाबाद

एक ऐसा स्थल जो कि भारतीय संस्कृति के प्रत्यक्ष दर्शन के रूप में उपस्थित है ऐसे स्थान को देखकर यह महसूस होता है कि आज के युवा जो कि शिक्षा के क्षेत्र में हैं परन्तु फिर भी भारतीय संस्कृति से छूटे हुए हैं ऐसे समस्त विद्यार्थियों को इस स्थल पर आकर यहाँ का दिग्दर्शन अवश्य करना चाहिए और अपने जीवन में इस स्थान के महत्वपूर्ण जानकारी को अवश्य लेकर जाना चाहिए। आज के समय में इस प्रकार की जानकारी समाज के हित में कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। यहाँ के सभी अधिकारियों का एवं सभी कार्यकर्त्ताओं का हृदय से धन्यवाद।

- श्री विरेन्द्र, विभाग संगठन मंत्री ABVP

आर्य समाज एक आस्तिक संगठन

आर्य समाज केवल और केवल उसी एक सत्ता को ईश्वर मानता है जो इस सारे संसार को बनाता और चलाता है। चाहे यह सब होता हुआ स्पष्ट दिखाई नहीं देता। पुनरपि सारे संसार की प्राकृतिक व्यवस्था, नियम अटल-अटूट हैं। जो कि यह सिद्ध करते हैं, कि यहाँ कोई न कोई अदृश्य रूप में व्यवस्थापक, नियामक है। ये नियम सब स्थानों पर सबके लिए सदा एक से (चलते) हैं। अतः वेद सर्वव्यापक तथा नित्य हैं और इन नियमों का नियामक भी सर्वव्यापक एवं नित्य जीवित सत्ता है। अतः आर्यसमाज किसी स्थान विशेष पर रहने वाली वस्तु विशेष को भगवान नहीं मानता। जो कि प्रत्येक प्रकार से दूसरों पर निर्भर है और स्वयं किसी प्रकार की चेष्टा नहीं करती है। ईश्वर के सर्वव्यापक होने से वह केवल किसी एक स्थान विशेष पर नहीं रहता। अतः उस-उस विशेष स्थान पर विशेष मास/दिन/घड़ी में ही उसकी भक्ति नहीं होती, क्योंकि वह सर्वव्यापक के साथ नित्य भी है। इसलिए सभी स्थानों पर सदा ही सबको ही ईश्वर की पूजा का समान अधिकार है। सभी ईश्वर के बनाए गए वायु, जल आदि प्राकृतिक पदार्थों का लाभ उठाते हैं। अतः सभी को कृतज्ञता के रूप में अपना कर्तव्य मानकर उस ईश्वर की उपासना करनी चाहिए। अर्थात् नियामक के नियमों को मानना चाहिए।

इससे स्पष्ट होता है, कि आर्य समाज ईश्वर को मानने वाला संगठन है। इसीलिए इसके प्रथम नियम में कहा है- 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाने हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।'

इस नियम में दर्शाया है कि आर्य समाज दो मुख्य युक्तियों के कारण ईश्वर को मानता है। प्रथम युक्ति है- संसार में सत्य विद्या का होना और दूसरी युक्ति है- सत्यविद्या से ज्ञात होने वाले (प्राकृतिक) पदार्थ। इन दोनों का आदि मूल ईश्वर ही है। क्योंकि कर्त्ता, दाता से ही कुछ सामने आता है। स्वतः नहीं। आर्यसमाज के द्वितीय नियम में युक्ति सिद्ध ईश्वर का पूर्णरूप कहा है। तभी तो ईश्वर के स्वरूप का अन्तिम गुण है- सृष्टिकर्त्ता होना। यह ईश्वर का प्रत्यक्ष, मुख्य कार्य है। यह कार्य यहाँ दर्शाये गए स्वरूप वाला ही कर सकता है। इस नियम के अन्तिम अंश में एक विशेष सन्देश दिया गया है कि 'उसी की ही उपासना करनी चाहिए।' तभी निर्दिष्ट स्वरूप वाला उपासना का अपेक्षित फल दे सकता है।

> "ऐसा अतिशय महान् कार्य करने वाले (परमात्मा) के प्रति धन्यवाद, कृतज्ञता, आभार स्वीकार करने के रूप में उपासना करनी चाहिए।"

कृतज्ञता ज्ञापन, आभार मानने के रूप में उपासना इसलिए करनी चाहिए क्योंकि सृष्टिकर्त्ता की सृष्टि रचना एक बड़े से बड़ा महान् कार्य है। जिससे प्रत्येक प्राणी को यहाँ प्रगति का अवसर मिलता है। ऐसा अतिशय महान् कार्य करने वाले के प्रति धन्यवाद, कृतज्ञता, आभार स्वीकार करने के रूप में उपासना करनी चाहिए। तभी आत्मिक बल से जीवन में उपासक संघर्ष करते हुए घबराता नहीं है।

इस सारे विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है, कि आर्यसमाज एक अस्तिक संगठन है।

आस्तिक का पहला अर्थ है- ईश्वर को मानने वाला।

दूसरा अर्थ है- वेद को प्रमाण मानने वाला और

तीसरा है- कर्मफल व्यवस्था को स्वीकार करने वाला। आस्तिक शब्द का शाब्दिक अर्थ है- अस्ति-सत्ता होने को स्वीकारने वाला। अतः आर्यसमाज तर्क, प्रमाणयुक्त ईश्वर, वेद और कर्मफल व्यवस्था की सत्ता को पूरी तरह से स्वीकार करता है।

- आचार्य भद्रसेन दर्शनाचार्य
बी २, ९२/७बी, शालीमार नगर, होशियारपुर- १४६००१

दृष्टिकोण

राष्ट्रवादी दयानन्द

सारे विश्व में आर्यावर्त्त के आर्य साम्राज्य की स्थापना करने का 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा बुलन्द करने वाले आर्यो में आर्यसमाज के धार्मिक संस्था होने की धारणा इतनी बद्धमूल हो गई है कि उसके विरुद्ध आवाज उठाना मुश्किल और उनकी इस धारणा को बदलना प्रायः असम्भव हो गया है। आर्यसमाज को धार्मिक संस्था भी इस रूप में माना जाने लगा है कि उसका काम ब्राह्मण के समान सिर्फ धर्म-कर्म का उपदेश करना रह गया है। परिणाम इसका यह हुआ है कि आर्यसमाज ऐसी कर्मकाण्ड-प्रधान संस्था बन गया है कि

उसका देश के सार्वजनिक एवं राजनीतिक जीवन से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहा। निजाम हैदराबाद में किये गए सत्याग्रह में भी जितना जोर धार्मिक अधिकारों पर दिया गया था, उतना उन नागरिक अधिकारों पर नहीं दिया गया, जिनके बिना मनुष्य के जीवन का निर्वाह होना कठिन हो जाता है। सत्याग्रह के बाद भी आर्यसमाज वहाँ कोरा धर्म-प्रचार ही करना चाहता है। धर्म-प्रचार की जो सीमा मान ली गई है, उससे आगे बढ़ने के लिए उसे प्रेरित करना पर्वत को हिलाने के समान असम्भव हो गया है। फिर भी यह पुस्तक लिखने का दुःसाहस किया गया है और ऋषि दयानन्द के राष्ट्रवाद को जनता के समक्ष उपस्थित करने का उद्योग किया गया है। इससे इतना लाभ तो जरूर होगा कि ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में आर्यसमाजियों की इस धारणा से पैदा हुई भ्रान्ति दूर हो जायेगी और उनका राष्ट्रीय स्वरूप उन पर प्रगट हो जाएगा, जो उनको सिर्फ समाज-सुधारक और धर्म-प्रचारक के ही रूप में देखते हैं।

आर्यसमाज को धर्म-प्रधान और सिर्फ धर्मोपदेश करने वाली ब्राह्मण संस्था मान लेने की बद्धमूल धारणा से पैदा हुए दुष्परिणामों की यथा स्थान चर्चा की गई है। सबसे भयानक दुष्परिणाम इस भ्रान्त धारणा का यह हुआ है कि आर्यसमाजी धर्म-कर्म की शाब्दिक उपासना में तो लग जाता है; लेकिन, शक्ति की साधना में नहीं लगता। वह स्वभावतः तार्किक होता है। बात-बात में वह नुक्ता-चीनी करने लग जाता है। इसलिए धर्म-कर्म में भी उसकी उतनी श्रद्धा-भक्ति नहीं रहती। इससे धर्म की उपासना भी पूरी नहीं हो पाती और शक्ति की साधना की ओर तो उसका कभी ध्यान ही नही जाता। 'शस्त्र' और 'शास्त्र' का जिसके धर्म में एक समान महत्व है, वह दोनों से वंचित रहकर 'कोरा बाबू' बन जाता है। आज आर्यसमाज को ऐसे ही बाबुओं की संस्था कहना चाहिए। इसी का स्वाभाविक और अनिवार्य दुष्परिणाम यह है कि आर्यसमाज गुण-कर्म-स्वभाव पर आश्रित चातुर्वर्ण्य की स्थापना के ठोस और विधायक कार्यक्रम को पूरा करके समाज रचना के द्वारा राष्ट्र-निर्माण की नींव नही डाल सका। जब धर्म-प्रधान ब्राह्मण-संस्था का हर एक भजनीक व उपदेशक ही नहीं, परन्तु हर सभासद् भी 'पण्डित' बनकर वर्णव्यवस्था की उच्चतम व अन्तिम सीढ़ी पर अनायास ही

चढ़ जाता है, तब अपने समाज, अपने देश और अपने राष्ट्र की सेवा करने वाले हनुमान सरीखे सेवक, भामाशाह सरीखे वैश्य और राजपूतों, सिखों एवं मराठों सरीखे क्षत्रिय कहाँ से पैदा हों? उनको पैदा करने या स्वयं को उन सरीखा बनाने की भावना या कल्पना किस के हृदय में पैदा हो सकती है? ऋषि दयानन्द की समाज-रचना एवं राष्ट्र-निर्माण के व्यापक कार्यक्रम की आर्य समाज नींव तक डालने में समर्थ नहीं हो सका और अपने विधायक कार्यक्रम की ओर दृढ़ता के साथ पैर नहीं बढ़ा सका। फिर उसे शिकायत है किसी ठोस और नवीन कार्यक्रम के अभाव की। कैसी हास्यास्पद यह स्थिति है?..............

सात-आठ प्रान्तों में पीछे कांग्रेस सरकारों का स्थापित होना साधारण बात नही थी। राष्ट्रवादी का हृदय उस पर फूला न समाया था। लेकिन, ऋषि दयानन्द के राष्ट्रवाद, उनकी राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा और स्वराज्य एवं साम्राज्य की उनकी महान् भावना व कल्पना का थोड़ासा भी परिचय रखने वाले के लिए यह दृश्य मर्मान्तक वेदना पैदा करने वाला था कि स्वराज्य की उस धुंधली सी छाया में सामूहिक रूप से आर्यसमाज का कुछ भी स्थान न था। चाहिए तो यह था कि आर्यसमाज की ही सरकारें सब प्रान्तों में कायम होतीं और केन्द्रीय सरकार पर भी उसी का कब्जा होता। लेकिन, आज तो ऐसा कहना और सोचना शेखचिल्ली की बातें प्रतीत होती हैं। आर्यसमाज ने राजनीति का परित्याग करके ऐसी कल्पनाओं और मनोरथों का पूरा होना सदा के लिए असम्भव बना दिया है। फिर भी आर्यसमाज में ऐसे साहसी युवकों की कमी नहीं है, जो आर्यसमाज में ऋषि दयानन्द के राष्ट्रवाद को स्थापित हुआ देखना चाहते हैं और देश के राष्ट्रीय नेतृत्व की बागडोर भी उसी के हाथों में आई हुई देखने को लालायित हैं। यदि ऐसे साथियों को इससे कुछ भी प्रोत्साहन मिल सका और उनकी इच्छा की पूर्त्ति में यह थोड़ा सा भी सहायक हो सकी, तो लेखक अपने परिश्रम को सफल हुआ मानेगा। अनेक भाईयों को मेरा यह उद्योग व्यर्थ भी प्रतीत हो सकता है, क्योंकि आर्यसमाज की वर्तमान गतिविधि में सहज में कोई परिवर्तन पैदा कर सकना सम्भव नहीं है। लेकिन, आशावादी निराश होना नहीं जानता।

आर्यसमाज में भले ही कोई परिवर्तन या क्रान्ति न हो सके; लेकिन आर्य युवकों के हृदय इतने कुण्ठित नहीं हो गये हैं कि वे भी परिवर्तन और क्रान्ति का स्वागत नहीं करेंगे। उनके हृदय में ऋषि दयानन्द के राष्ट्रवाद की यदि हलकी-सी भी ज्योति जग गई और सर्वसाधारण में ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में पैदा हुआ भ्रम थोड़ा-सा भी दूर हो गया, तो लेखक अपने उद्योग को पूरी तरह सफल हुआ मानेगा। बस, इसी इच्छा और आकांक्षा से उसने यह उद्योग किया है।

आर्यसमाज के हाथों से देश के नेतृत्व की बागडोर निकल गई है। राजनीतिक क्षेत्र में उसका कोई प्रभाव न रहने से दूसरे क्षेत्रों का नेतृत्व भी उससे छिन गया है। वर्तमान युग में राजनीति सार्वजनिक जीवन का आत्मा है। उसी की धुरी के चारों ओर बाकी सब समस्यायें घूमती हैं। उसकी उपेक्षा करने वाली संस्थाओं की स्थिति निष्प्राण शरीर की सी हो जाती है। उनकी महत्वाकांक्षाये मुरझा जाती हैं। दिल की उमंगें फीकी पड़ जाती हैं। चेतना नष्ट हो जाती है। दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने वाली चुम्बक शक्ति बुझ जाती है। आर्यसमाज का डेढ़ सदी का इतिहास ही क्यों, सभी संस्थाओं का इतिहास इसका साक्षी है। सिखों का प्रारम्भ किसी भी रूप में क्यों न हुआ हो; लेकिन, उनका अभ्युदय, उन्नति और प्रगति तब चरम सीमा पर पहुँची, जब दसवें गुरु श्री गोविन्द सिंह जी महाराज ने उनको 'खालसा' या 'अकाली' के नाम से नया जन्म दिया। उसी का परिणाम यह हुआ कि उन वीरों ने उस पंजाब में सिख साम्राज्य की स्थापना की, जिसमें आज साम्प्रदायिकता का बोलबाला है और जहाँ राष्ट्रीयता का पनपना इन दिनों में इतना कठिन माना जाने लगा है कि उसे 'हिन्दुस्तान का अलस्टर' कहा जाता है। सिखों में त्याग, तपस्या और बलिदान का माद्दा आज भी किसी से कम नहीं है। ननकाना और गुरु का बाग आदि में उन्होंने जिस दिलेरी का परिचय दिया है, वह विस्मयजनक है। लेकिन, उनकी महत्वाकांक्षा आज केवल गुरुद्वारों तक सीमित रह गई है। 'ग्रन्थ साहब' की पूजा करना उनके कर्तव्य-कर्म की अंतिम रेखा बन गई है। अमृत छका कर कड़ा-कच्छ-कृपाण-कंघा व केश धारण करा कर

अपनी मर्दुमशुमारी बढ़ा लेना उनके पुरुषार्थ की चरम सीमा हो गई है। इसी से आज वह तेज, ओज एवं वीर्य नष्ट हो

चुका है, जिसके बल पर पंजाब में सिख साम्राज्य की स्थापना की गई थी। साम्राज्य की आकांक्षा आज है ही कहाँ? वह नष्ट हो चुकी है।

मराठों में स्वामी रामदास जी महाराज ने 'दासबोध' लिखकर जिस राष्ट्रीय महात्वाकांक्षा को जन्म दिया था, उसी का परिणाम था कि वे पूना से पानीपत तक चढ़ आए थे और सारे हिन्दुस्तान में मराठा साम्राज्य को कायम करने का भव्य चित्र उनकी आँखों के सामने चौबीसों घण्टे नाचा करता था। छत्रपति शिवाजी महाराज के हृदय में स्वामी रामदास द्वारा चिंगारी की तरह सुलगाई गई यह भावना इस प्रकार धाय धाय करके सुलग पड़ेगी, वह कौन जानता था? लेकिन वह बुझकर राख हो गई और हर कोई उस पर पैर रखकर निस्संकोच आगे बढ़ जाता है। क्यों? केवल इसलिए कि मराठों में वीरत्व होते हुए भी वह राजनीतिक भावना और आकांक्षा शेष नहीं रही है। उसका अन्त होने के साथ ही मराठों के तेज का दीपक भी बुझ गया। छत्रपति शिवाजी महाराज की पूना में मूर्ति को स्थापित करने और शिवाजी मंदिर बनवाने में ही उनके अनुयायियों ने अपने पुरुषार्थ की

इतिश्री मान ली है। उनके वंशज होने के नाते अपने को 'छत्रपति' कहाने वाले भी दूसरों के छत्र के नीचे गुलाम बने हुए हैं।......

गौतम बुद्ध का सन्देश सब संसार में चारों ओर तब फैला, जब कि इस देश में सम्राट् अशोक अपना साम्राज्य कायम कर चुके थे। यदि इतने बड़े साम्राज्य की शक्ति बौद्धों की पीठ पर न होती, तो बौद्ध धर्म हिन्दुस्तान के बाहर फैल नहीं सकता था। आज हिन्दू यदि अस्सी करोड़ होने का दावा कर सकते हैं, तो सिर्फ इसलिए कि सम्राट् अशोक के सारे साम्राज्य की सम्पूर्ण शक्ति उनकी सहायता के लिए किसी समय उनकी पीठ पर थी। वह शक्ति नष्ट हुई कि इस देश में बौद्ध धर्म सिर्फ इतिहास का विषय रह गया।

पिछले इतिहास के पन्नों को पलटने का कष्ट न उठाकर यदि हम वर्तमान इतिहास का ही कुछ अनुशीलन कर सकें, तो सहज में यह समझ में आ जायेगा कि ईसायत का इतना प्रचार ईसाई पादरियों ने नहीं किया जितना ईसाई साम्राज्यों ने किया है। यूरोप के साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने अपने साम्राज्यों के विस्तार के लिए बाईबिल और ईसाई पादरियों से गोला बारुद और फौजों की अपेक्षा भी कहीं अधिक काम लिया है। एक विचारक ने साम्राज्यवादी यूरोपियन राष्ट्रों के साम्राज्य की समृद्धि में तीन साधन गिनाये हैं, जिन्हें उसने 'बाइबिल, बियर और वेयोकेट' नाम दिया है। चीन को अपने प्रभाव में लाने के लिए वहाँ फौजों से पहिले ईसाई पादरी भेजे गए और वहाँ के लोगों को ईसाई बनाने के साथ साथ अफीमची भी बनाया गया। हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज की जड़ों को पाताल तक पहुंचाने के लिए ईसाई पादरियों की टोलियों पर टोलियां भेजी गईं। फौजी छावनियों की अपेक्षा ईसाई मिशनों और ईसाई स्कूलों एवं कॉलेजों की संख्या यहाँ कहीं अधिक है। इटली का तानाशाह मुसोलिनी और उस के देशवासी स्वयं पोप के आदेशों और बाइबिल के उपदेशों पर आचरण नहीं

करते लेकिन अबीसीनिया की फतह के बाद वहाँ इतनी फौजें नहीं भेजी गईं, जितने पादरी भेजे गए। शस्त्रास्त्र की शक्ति, दमन एवं कानून के आतंक और पुलिस एवं अदालत के रौब से भी अधिक महत्व लोगों के दिल और दिमाग को जीतने में है, इस सच्चाई को ईसाई राष्ट्र खूब समझते हैं ओर वे यह भी जानते हैं कि ईसाइयत का प्रचार इसका सबसे बढ़िया साधन है। इसलिए ईसाई राष्ट्रों के साम्राज्य के विस्तार के साथ-साथ ईसायत का प्रचार भी स्वतः ही बढ़ता चला गया। ईसाई राष्ट्रों में अपने साम्राज्यों के विस्तार की भावना खत्म हुई कि ईसायत का दीपक भी गुल हो जायेगा।

ईसायत ईसाई राष्ट्रों के लिए जितनी सहायक साबित हुई है, उतना ही बल ईसाई राष्ट्रों से और उनकी साम्राज्यवादी महात्वाकांक्षा से ईसायत को मिला है। वर्तमान विश्वव्यापी महायुद्ध में जो आवाज सबसे ऊँची सुनने में आ रही है, वह यह है कि यदि कहीं नाजीवाद और फासिटीवाद विजयी हो गए, तो संसार में से ईसायत का नामोनिशाँ मिट जायेगा।

नाजीवाद और फासिटीवाद को ईश्वर, धर्म, सभ्यता और मनुष्यता का दुश्मन बताकर यह भय और आतंक फैलाया जा रहा है कि वे संसार में से इन सबको मिटा देना चाहते हैं। सच्चाई यह है कि यदि कहीं ये विजयी हो गए, तो ईसाई राष्ट्रों का साम्राज्य, प्रभुत्व एवं वर्चस्व दुनिया में से उठ जायेगा और उसी के साथ ईसायत का विस्तार भी मिट जायेगा। आज संसार में ईसायत का जो बोलबाला है, उसका कारण यही है कि उसकी पीठ पर ईसाई राष्ट्रों के साम्राज्य की पूरी शक्ति है।

ऋषि दयानन्द इस शक्ति के महत्व को खूब समझते थे। वे यह भली प्रकार जानते थे कि देश में स्वराज्य और विदेशों में भी अपने साम्राज्य के होने का महत्व क्या है? उनका धर्म कोरा कर्मकाण्डी सम्प्रदाय न था। वे वस्तुतः राजधर्म के उपासक थे। उनका धर्म व्यक्ति के लिए है और व्यक्तियों की ईकाई के बाद जब समष्टि का सवाल उपस्थित होता है; तब वे उस राजधर्म का प्रतिपादन करते हैं, जिसकी पहिली संख्या स्वराज्य है और उससे अगली है अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य। उनकी यह कल्पना और भावना उनके समस्त लेखों, समस्त ग्रन्थों और समस्त जीवन में ओतप्रोत है। जो पाठक उनकेलेखों, भाषणों, ग्रन्थों और जीवनी के विस्तार में नहीं जा सकते, वे यदि एक बार 'सत्यार्थप्रकाश' के ही पन्ने उलट जायं, तो उन्हें हमारा अभिप्राय सहज में समझ में आ जायेगा। 'सत्यार्थ प्रकाश' को आमतौर पर आर्य समाज का बाईबिल मान लिया गया है। लेकिन, उसका वास्तविक महत्व बाईबिल से कही अधिक है। मनुष्य, समाज और राष्ट्र के जीवन का उसमें वह नक्शा खींच दिया गया है। जिसको सामने रखकर अभ्युदय और निश्रेयस दोनों का सम्पादन किया जा सकता है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के छठे समुल्लास में तो पूरी तरह राजधर्म अथवा राजनीति की ही चर्चा की गई है। उसका प्रारम्भ इन शब्दों से किया गया है कि 'अथ राजधर्मान् व्याख्यास्यामः' अर्थात् इस प्रकरण में राजधर्मो की व्याख्या करेंगे। मनुस्मृति के जिन श्लोकों से इस प्रकरण को शुरू किया गया है, उनमें कहा गया है कि अब उन राजधर्मो को कहेंगे, जिसमें यह कहा गया है कि राजा किस प्रकार का होना चाहिए, कैसे कोई राजा बन सकता है और कैसे वह सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त कर सकता है?

धार्मिक किंवा साम्प्रदायिक ग्रन्थ में इस प्रकरण की और राजधर्मों की व्याख्या की क्या जरूरत थी? फिर ग्याहरवें समुल्लास में मतमतान्तर के खण्डन के बाद महाराज युधिष्ठिर से लेकर महाराज यशपाल तक के उन १२४ राजाओं की नामावली दी गई है, जिन्होंने इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) को राजधानी बनाकर यहाँ ४१५७ वर्ष ६ मास और १४ दिन तक राज्य किया है। अब आर्य सिद्धान्त के अनुसार वेदों में इतिहास नहीं माना गया है, तब आर्य सिद्धान्तों की व्याख्या करने वाले इस गन्थ में और मत मतान्तर के खण्डन के प्रकरण के अन्त में इस इतिहास को देने की जरूरत नहीं होनी चाहिए थी। लेकिन, सच तो यह है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' सिर्फ आर्य सिद्धान्तों की व्याख्या करने वाला कोई धार्मिक ग्रन्थ नहीं है। फिर स्वामी जी ने मत-मातान्तर का खण्डन भी कोरी धार्मिक दृष्टि से नहीं किया है। इस प्रकरण को इस इतिहास के साथ समाप्त करने का यही अभिप्राय है कि सर्वसाधारण में फिर से अपने देश में अपना वैसा ही राज्य कायम करने की इच्छा या भावना पैदा हो, जैसाकि कि युधिष्ठिर से यशपाल तक चार सौ सदी से भी अधिक समय तक कायम रहा। इस खण्डन मण्डन के प्रकरण के समान अन्य सब प्रकरणों में भी 'सत्यार्थ प्रकाश' में अथ से इति तक, सर्वत्र यही भावना ओतप्रोत है। केवल ईश्वर, वेद, धर्म, आचार, विचार, सदाचार और कर्मकाण्ड तक आर्यसमाज को सीमित रखने में अपना और इसी में आर्य समाज का भी कल्याण मानकर इस चेष्टा में लगे हुए लोग यह भूल जाते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश में पहिले पाँच समुल्लासों में व्यक्तिगत अभ्युदय की चर्चा करने के बाद जब समष्टि के अभ्युदय की चर्चा शुरू की गई है, तब सबसे पहिले राजधर्म की व्याख्या की गई है। वेद, ईश्वर, जगत् की उत्पत्ति, विद्या, अविद्या बन्ध, मोक्ष, आचार-अनाचार, भक्ष्यामक्ष्य और मत-मतान्तर का खण्डन आदि के प्रकरण उसके बाद में रखे गए हैं। इसी से राजधर्म या राजनीति का महत्व प्रकट है। 'सत्यार्थ प्रकाश' में जहाँ भी कही स्वदेश की चर्चा की गई है, वहाँ ऐसा प्रतीत होता है, जैसे देशभक्ति का स्रोत फूट निकला हो। जहाँ कहीं देश की पराधीनता से पैदा हुई दुर्दशा का वर्णन किया गया है, वहाँ ऋषि के हृदय की व्यथा फूट पड़ती है और आँखों से अश्रुधारा बह निकलती है। अपने देश के प्राचीन गौरव का वर्णन पढ़कर पाठक का हृदय भी अभिमान से फूला नहीं समाता।

सच तो यह है कि ऋषि के कार्य का राजनीतिक महत्व इस दृष्टि से कहीं अधिक है कि इस देश में अंग्रेजी राज के कायम होने के बाद वे पहिले व्यक्ति हैं, जिन्होंने देशवासियों के हृदय में स्वाभिमान और स्वदेशाभिमान के दीपक को बुझते-बुझते बचाया है।

[यह आलेख सन् 1941 में लिखा गया। पाठक इस तथ्य को ध्यान में रखें।]

साभार-राष्ट्रवादी दयानन्द
-सत्यदेव विद्यालंकार

भारत के प्राचीनकाल में स्त्री जाति की बड़ी प्रतिष्ठा रही है। प्राचीनकाल की कई आदर्श स्त्रियों ने भारत के उत्थान में उत्कृष्ट सहयोग से स्वर्णिम इतिहास रचा है। भारत में, समाज में एवं मानव मात्र के लिए समर्पित महिलाओं की गौरवपूर्ण परम्परा रही है। मानव इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि पुरुष के निर्माण में नारी शक्ति का विशेष योगदान है। कहीं वे प्रेरणा स्रोत रही है तो कहीं उत्प्रेरक शक्ति। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' की गौरवपूर्ण भावना हमारी सांस्कृतिक विरासत है। इसी विरासत की अपने आलोकित व्यक्तित्व और गुण गरिमा के कारण मध्यकालीन भारत में मध्य भारत की महत्वपूर्ण रियासत होल्कर राज्य की शासिका लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर का नाम इन्दौर की महारानी के नाम से जनविख्यात है। आपने जीवन में धार्मिक पवित्रता को स्थान देकर अपने आलोकित व्यक्तित्व और गुण गरिमा द्वारा सेवा, सौम्यता, सरलता और सादगी को जीवन श्रृंगार बना प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जन कल्याणकारी कार्यों को मूर्तरूप देकर दृढ़ता, धैर्य और साहस के साथ होल्कर राज्य की शासिका की बागडोर थामते हुए अपने लौकिक व्यवहार से प्रजा में आप लोकमाता बन गई थीं।

(13 अगस्त : पुण्यतिथि पर)

मालव महारानी लोकमाता
अहिल्याबाई होल्कर

अहिल्याबाई होल्कर का जन्म १७२५ ई. में महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिलान्तर्गत चौंदी गाँव के पटेल मानकोजी शिन्दे के घर हुआ था। माता श्रीमती सुशीलादेवी सद्‌गृहस्थ, कर्त्तव्य परायण धार्मिक महिला थीं। माता ने सुसंस्कार देकर धार्मिक भाव अपनी बिटिया में सहजता से भर दिए थे। धार्मिक प्रवृत्ति बालिका अहिल्या को परिवार से विरासत में मिली।

अहिल्याबाई न तो अपूर्व सुन्दरी थी न ही आकर्षक कलावती वह तो एक सीधी, सरल और भोलीसी ग्रामीण कन्या थी। संयोग बना कि एक दिन उसी गाँव के शिव मन्दिर में होल्कर राज्य के संस्थापक और मराठा शक्ति के प्रतीक सेनापति मल्हारराव होल्कर रात्रि विश्राम के लिए रुके तो आरती कर रही शान्त स्वभाव की किशोरी अहिल्या पर उनकी नजर पड़ी। अहिल्याबाई को मन्दिर जाते समय राजसी ठाठ-बाट हाथी, घोड़ो के लश्कर तनिक भी विचलित न कर सके। अहिल्या अपने लक्ष्य पूर्ति की ओर उपराम भाव से चलती गई। मन्दिर पहुँच कर नित्य की भाँति एकाग्र मन से यथावत् पूजन किया और उसी भाव से वापस चली गई। अहिल्या की धार्मिक निष्ठा सादगी और विनम्रता ने मल्हारराव होल्कर को विवश कर दिया कि इसे अपने युवराज पुत्र खण्डेराव के लिये पुत्रवधु के रूप में स्वीकार कर लें। इस सन्दर्भ में अहिल्या के पिता मानकोजी से बात की गई, उन्हें तो मुँहमांगी मुराद ही मिल गई। १७३५ में अहिल्याबाई विवाह सूत्र में बँधकर होल्कर राज्य की राजधानी इन्दौर आ गई। अब अहिल्या इन्दौर की युवरानी बन गई थी। यद्यपि वह न तो राजपुत्री थी और न राजघरानों से उनका कोई सम्पर्क ही रहा था। पर अहिल्या के पास शील, शालीनता, अनुशासन, गम्भीरता, धीरता और आकल्पकता आदि मूलगुणों के कारण राजमहल के वातावरण में सहजता से अपने को ढाल लिया। अहिल्याबाई ने अपनी कार्यकुशलता से ससुराल में सभी का दिल जीत लिया।

अहिल्याबाई के पति युवराज खण्डेराव होल्कर इकलौते होने के कारण बड़े हठी, चिड़चिड़े और उद्दण्ड थे। राजकार्य में उन्हें कोई रुचि भी नहीं थी। अहिल्याबाई ने अपने प्रेम त्याग सहानुभूति और कर्त्तव्य निष्ठा से पति खण्डेराव का दिल जीत लिया था। परिणामस्वरूप खण्डेराव के व्यवहार में परिवर्तन आने लगा था और वे राजकार्य में भी अपेक्षित रुचि लेने लगे।

अहिल्याबाई अपने गुण ग्रहिता के कारण पितासम अपने ससुर के साथ युद्धक्षेत्र में जाने लगीं। युद्धकला की कुशलता को देखते हुए मल्हारराव जी ने पूर्ण प्रोत्साहन और संरक्षण देकर युद्ध कार्य के लिये धन, सैन्य, बल, भोजन सामग्री और अस्त्र-शस्त्र की आवश्यक व्यवस्था कर इन्दौर राजघराने का मान बढ़ा दिया था। पुत्र व पुत्र वधु, जो राजकार्य में दक्ष हो चुके थे उन्हें राज्य सम्बन्धित सभी कार्यों का दायित्व सौंप कर मल्हारराव सन्तोष व सुख से जीवन यापन करने लगे थे। राजघराने की गृहस्थी बड़े आनन्द से चल रही थी किन्तु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था।

उन दिनों मराठे भारत में हिन्दू राज्य के विस्तार में लगे हुये थे और देश के लगभग सभी राजाओं से चौथ वसूली करते थे, किन्तु भरतपुर क्षेत्र के जाट राजाओं ने चौथ देने से इंकार कर दिया। मल्हारराव होल्कर भरतपुर के शासक सूरजमल से निर्धारित वार्षिक चौथ वसूलने गये। खण्डेराव के नेतृत्व में मराठा सेना ने भरतपुर के राज्य के किले को घेर लिया। दोनों पक्षों की ओर से तीन महीने तक घमासान युद्ध हुआ। मराठों की जीत निश्चित ही थी पर २४ मार्च १७७४ का दिन था खण्डेराव अपनी सेना का संचालन करते हुए युद्ध क्षेत्र में घूम रहे थे। तभी घात लगाए शत्रु ने गोलियों की बौछार करके खण्डेराव को विश्वासघात से मार डाला। इकलौते पुत्र की वीरगति देखकर मल्हारराव की तो मानो कमर ही टूट गई। उधर अहिल्याबाई को पति के बिना तो भावी जीवन अन्धकार मय लगने लगा।

उन्होंने अपने ससुर मल्हारराव की वृद्धावस्था और होल्कर राज्य की जनता के कल्याण के लिए निर्णय लिया कि लोक लाज के डर से वह सती नहीं होगी। अहिल्याबाई ने निश्चय कर जिस निडरता और साहस का परिचय दिया ऐसी मिसालें कम ही मिलती हैं। सच तो यह है कि वह सती न होकर मानव सेवा के लिये समर्पित होकर महासती की श्रेणी में आ गईं। आत्मघात तो एक पाप है ही साथ ही अन्य प्रकार से भी जीवन का विनाश करना एक अपराध है। स्वार्थ का त्याग और परमार्थ को ग्रहण कर उपासना सेवा और सत्कर्म, परमार्थ पथ की नगण्य पथिका बन अभाव और आवश्यकता पीड़ित जनों की सहायता, दीन दुःखियों निरुपाय, रोगीजनों की सेवा जीवन का ध्येय बना लिया था। जिसके फलस्वरूप लोग उन्हें देवी मानने लगे। उनका नाम देवी अहिल्या के नाम से विख्यात हो गया, क्योंकि देवी अहिल्या बहुत ही सुझबूझ के साथ राज का संचालन करने लगी थीं।

२० मई १७६६ को ७३ वर्ष की आयु में देवी अहिल्या के पथ प्रदर्शक व संरक्षक तथा मराठा शक्ति का आधार स्तम्भ सदा-सदा के लिये चिर निद्रा में सो गया। भाग्य की विडम्बना देवी अहिल्या पर संकट पर संकट आते गये। पति खोया, ससुर खोया और कुछ समय बाद अपना पुत्र भालेराव (मालेराव) को भी खो दिया। राज्य के उत्तराधिकारी के अभाव में इन्दौर की बागडोर पूर्ण रूप से देवी अहिल्या ने अपने हाथ में ले ली। सहयोगी मंत्री के रूप में गंगाराम नामक व्यक्ति को साथ रख कुशलता से राजकार्य सम्पादित करने लगीं।

अपनी पुत्री मुक्ताबाई का विवाह स्वयंवर परम्परानुसार बड़ी चतुराई से किया। उस समय डाकूओं-चोरों का आतंक बढ़ गया था। उनका दमन करने हेतु राजकीय घोषणा करवा दी कि जो कोई इन अपराधियों का दमन करेगा, उसके साथ देवी अहिल्या अपनी बेटी मुक्ताबाई का विवाह कर देगी। इस घोषणा में देवी अहिल्या की दूरदर्शिता व बुद्धिमत्ता छिपी थी। प्रथम चोर, डाकूओं का अन्त, योग्य वीरता की परीक्षा के साथ योग्य वर का चयन तथा तीसरे बेटी के विवाह के लिये राजनीतिक लोलुपता समाप्त, फिर क्या था? साहसी नवयुवक यशवन्तराव ने यह बीड़ा उठाया और प्राणों की परवाह किए बगैर शीघ्र ही इन्दौर राजघराने को चोर, डाकुओं के आतंक से मुक्त करा दिया। अपनी घोषणानुसार देवी अहिल्या ने अपनी बेटी मुक्ताबाई का विवाह योग्य वर यशवन्तराव से सम्पन्न करा दिया।

विवाह उपरान्त राज्य की शान्ति व्यवस्था व्यवस्थित हो गई। इस हेतु देवी अहिल्या ने राज्य के समृद्ध सेठों, साहूकारों, व्यापारियों, शिल्पियों, कलाकारों, मजदूरों व अन्य आर्थिक क्षेत्र में मदद करने वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहन देकर व्यापार व शिल्पों में वृद्धि करा राज्य की उन्नति में कोई कसर नहीं छोड़ी। मुक्ताबाई ने पुत्र रत्न को जन्म दिया। किशोरावस्था में नथ्थाबा भी मृत्यु का ग्रास बन गया। पुत्र के वियोग में यशवन्तराव भी काल कलवित हो गये। यशवन्त राव की मृत्यु पर मुक्ताबाई पति के साथ सती हो गई। देवी अहिल्या और कितना दैवी प्रकोप सहतीं। हिम्मत की धनी, प्रजारंजक, प्रजापालक विपदाओं को सहकर भी होल्कर राज्य का शासन कुशलतापूर्वक करती रहीं। अकेली महारानी को पाकर विरोधी कुटिल लोगों ने शासन पर अधिकार करने की कुचेष्टा की तो देवी ने मुँह तोड़ उत्तर दिया- 'जिस वंश के लोगों ने इस राज्य पर शासन किया है उनमें से मैं एक की पुत्रवधु हूँ। दूसरे की पत्नि और तीसरे की माता। इस नाते मेरा यह अधिकार ही नहीं कर्त्तव्य भी है कि शासन व्यवस्था पर किसी की टेढ़ी आँख उठी, फोड़ दी जायेगी, मेरे रहते मेरी प्रजाजनों को कोई कष्ट नहीं होने दूँगी।' देवी अहिल्या ने बड़ी धीरज योग्यता, लगन व निष्ठा से राज्य का कामकाज ही नहीं सम्भाला, अपने अनुशासन के लिये वह जनप्रिय बन गईं। यहाँ तक कि राज्य का कोई कर्मचारी अन्याय व पक्षपात अनीति करने से डरने लगा था। उस समय राज्य की

यह व्यवस्था थी कि जिस परिवार के सभी पुरुष मर जाएँ केवल स्त्रियाँ हों तो सारा धन राजकोष में जमा होता था। देवी अहिल्या बाई ने इस नियम को बदला, इस प्रथा को तोड़ा। मृतक् व्यक्ति का धन अब उसी परिवार की स्त्रियों के पास रखने की राज्याज्ञा निकाल दी। वहीं विधवाओं को दत्तक पुत्र गोद लेने का अधिकार भी दिलवाया।

देवी अहिल्याबाई ने अपने शासन काल में सदैव ऊँचा आदर्श रखा और उस पर अटल रहीं। उनका प्रजा के साथ माता-पुत्र का नाता था। वे बिना किसी भेदभाव के हर किसी से मिलती। राजा हो या रंक, छोटा या बड़ा। राज्य का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपनी व्यथा कह सकता था और अपेक्षित न्याय प्राप्त कर सकता था। वह दोपहर से सन्ध्या तक दरबार करतीं, सन्ध्या होते ही दो घन्टे के लिए उपासना करतीं। भोजनोपरान्त फिर दरबार में आ जाती। रात के दस बजे तक दरबार में बैठकर

राजकाज सम्पन्न करती थीं। एक विशाल राज्य की स्वामिनी होते हुए भी वे महेश्वर में एक साधारण से छोटे घर में रहती थीं। किसी भी शासक का छोटा सा आडम्बरहीन निवास स्थान मिलना मुश्किल ही नहीं असम्भव है।

देवी अहिल्या बाई होल्कर ने राजकीय जीवन को पूर्ण पवित्रता प्रदान की। धर्माचरण से राज्य का सफलतापूर्वक संचालन किया। जनता से प्राप्त धन का उपयोग सार्वजनिक हित के लिये किया। उन्होंने देश के प्रायः समस्त तीर्थस्थानों में विशाल मन्दिर, प्लाट, कुँए, बावड़ी, धर्मशाला, गोसदन और कई भवन बनवाए। यवन आक्रान्ताओं द्वारा नष्ट-भ्रष्ट किए गये मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया। गुजरात में सोमनाथ मन्दिर और काशी में विश्वनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार देवी अहिल्याबाई होल्कर के ही कर कमलों से हुआ। उत्तर के बद्रीनाथ के मार्ग पर आज भी अहिल्या गोचर है। यह जमीन देवी अहिल्या ने खरीद कर गायों के बसने के लिये सुरक्षित कर दी थी। दक्षिण में रामेश्वर मन्दिर में अहिल्याबाई द्वारा दिया गो पन्ना आज भी सुरक्षित है। इस प्रकार देवी अहिल्या बाई ने उत्तर में बर्फ से ढंकी पर्वत

शृंखलाओं से लेकर, समुद्र तट तक द्वारका से लेकर पुरी तक धार्मिक निर्माण कार्य कराए।

महारानी अहिल्याबाई अपने धर्म के साथ-साथ अन्य मजहबों को भी स्नेह दृष्टि से देखती थीं, सम्मान करती थीं एवं उनको संरक्षण भी दिया। हजारों मुस्लिम जुलाहों को अपनी राजधानी महेश्वर में बसाकर उनके द्वारा निर्मित साड़ियों के बिक्री हेतु बाजार खुलवाए। उनकी बेटियों की शादी स्वयं खर्चे से करवायी। अपने शासनकाल में लोककलाओं तथा लोकसंस्कृति को पूरा संरक्षण दिया। साहित्य, व्याकरण, धर्मशास्त्र, वेदान्त आदि विधाओं के विद्वानों को देशभर से बुलाकर महेश्वर में बसाया किन्तु अपनी प्रशंसा करने वालों को कभी प्रश्रय नहीं दिया। देवी अहिल्या जीवन में ईमानदारी को विशेष प्राथमिकता देती थीं।

एक बार उन्होंने ओंकारेश्वर में बढ़िया घाट बनाने के लिये मुनीमों को धन दिया। लेकिन लालच के वशीभूत मुनीमों ने लालचवश धन निर्धारित कार्य में न लगाकर खुद हड़प लिया था। इसकी जानकारी मिली तो तुरन्त मुनीमों को पूरे हिसाब-किताब के साथ बुलवाया। मुनीम भयभीत हो गये। वे पूरा बहीखाता लेकर दरबार में पहुँचे। देवी अहिल्या तुरन्त मुनीमों को बहीखाते समेत नाव से नर्मदा नदी के बीच में ले गयीं और उनके बहीखाते नर्मदा में यह कह कर फिकवा दिये कि आने वाली पीढ़ियों को यह आभास नहीं हो कि हमारे जमाने के मुनीम धार्मिक कार्यों वाले धन को भी खाने की मंशा रखते थे। इतना सुनना था कि मुनीमों ने अहिल्या के पाँव पकड़कर क्षमा माँगी और एक-एक पैसा ईमानदारी के साथ राज्य के खजाने में जमा करा दिया।

महारानी देवी अहिल्या ने अपने शासन काल में बहुत कम युद्ध किये। उन्होंने सैन्यशक्ति का उपयोग दूसरे के राज्य हड़पने के लिये नहीं अपितु राज्य की सुरक्षा के लिये ही किया। एक बार अपने सचिव (मंत्री) गंगाराम की स्वार्थनीति के चलते उसी के षड्यंत्र के द्वारा राघोबा पेशवा अहिल्या बाई को कमजोर समझकर राज्य हड़पने की नीति से सेना लेकर आ गया। अहिल्याबाई ने गरजकर कहा- मेरे पुरखों ने खून पसीना एक करके तलवार के बल पर इस राज्य की स्थापना की है। यह राज्य मुझे किसी खैरात में नहीं मिला। अगर किसी ने इसकी

ओर टेढ़ी आँख से भी देखा तो मुँहतोड़ उत्तर दिया जायेगा। यह गर्जना सुन राधोबा पेशवा उल्टे पैर सैन्यबल के साथ लौट गया। एक बार उदयपुर के शासक ने होल्कर राज्य के रामपुरा नगर पर आक्रमण कर दिया तो महारानी अहिल्याबाई ने अपने विश्वासी मुस्लिम सेनानी शरीफभाई को युद्ध के लिये भेजा। अहिल्याबाई ने युद्ध का सारा संचालन अपने हाथ में लिया अन्ततः उनकी बहादुरी और रणकौशल के सामने शत्रु सेना ने घुटने टेक दिए। यह विजय उन्होंने ६३ वर्ष की अवस्था में महेश्वर से रामपुरा की लम्बी यात्रा करके प्राप्त की थी। नाना फडनवीस ने इस विजय पर कहा था- मैनें अब तक देवी अहिल्या के धार्मिक कार्यों की ही प्रशंसा सुनी थी मुझे यह नहीं मालूम था कि वे इतनी वीर भी हैं और उदयपुर के राजा की सेना को भी हरा सकती हैं। अब मैं उनकी शूरवीरता का भी कायल हो गया हूँ।

होल्कर राज्य मालवा, राजपूताना, मेवाड़ और दक्षिण के पठार के एक सौ छब्बीस परगनों में फैला हुआ था। अहिल्याबाई होल्कर की कुशल राजनीति का ही प्रभाव था कि किसी भी राज्य ने होल्कर राज्य पर उनके शासन काल के दौरान आक्रमण नहीं किया। मल्हारराव होल्कर के शासनकाल में राज की वार्षिक आय पिचहत्तर लाख थी, जो अहिल्याबाई के समय में बढ़कर सवा करोड़ हो गई थी। उनके राज्य में जनता पर बहुत ही कम कर लगाए गये थे। उन्होंने भीलों-डाकूओं को प्रेम और शक्ति के संतुलित उपयोग से शान्त कर दिया था। जिससे जनसाधारण और व्यापारी वर्ग निर्भय हो गया था। आपके मार्गदर्शन और संरक्षण में महेश्वर का वस्त्र उद्योग दिन प्रतिदिन उन्नतिशील रहा। उन्होंने गायों के समुचित विकास के लिये सर्वत्र पंयाचतों की स्थापना करायी थी तथा उन्हें न्याय करने के व्यापक अधिकार दिये थे। उन्होंने समाज में प्रचलित पर्दाप्रथा को दूर किया। वह अंधश्रद्धा और अंधभक्ति से सदैव दूर रहीं।

जीवन के अन्तिम चरण में ७० वर्ष की अवस्था में देवी अहिल्याबाई अपने जीवन से पूर्ण संतुष्ट थीं। उनकी कोई अन्तिम इच्छा या आकांक्षा शेष न रही थी। सब प्रकार अधिकार सम्पन्न तथा गुणवती होने पर भी महारानी अहिल्याबाई में अभिमान, अहंकार अथवा मद छू तक नहीं गया था। वे आदि से अन्त तक अपने आन्तरिक जीवन में वैसी ही भोली, सरल और साध्वी बनी रहीं जैसी कि इन्दौर आने से पूर्व थी। गुणों और कर्त्तव्यनिष्ठा में कितनी शक्ति होती है और उसके आधार पर मनुष्य कहाँ से कहाँ पहुँच सकता है? महारानी देवी अहिल्याबाई ने होल्कर राज्य पर २६ वर्ष के लम्बे समय तक एक सफल शासन किया था। उन्होंने ईश्वर को समर्पित कर राज्य को जनता के कल्याण के लिये चलाया था। शिव उपासिका १३ अगस्त १७६५ (भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी) के दिन देवी अहिल्या ने अन्तिम सांस ली। अहिल्याबाई होल्कर राज्य की पुत्रवधू बनकर आयी थी और अपने सद्गुणों और कुशल शासन के बल पर 'लोकमाता' बनकर संसार से विदा ली। धन्य है वे गुण और उनको धारण करने वाले वे गुणी जो इस जीवन में देवत्व पाकर अमर जीवन के मुक्ति के अधिकारी बनते हैं। अहिल्याबाई होल्कर का हमारे देश के ज्वाजल्यमान नक्षत्रों में जीवन प्रकाशपूर्ण था। नारी समाज ही नहीं भारत की नारियाँ और पुरुषो में उनका स्थान बहुत ही ऊँचा है। भारत के महान् और गौरवमय व्यक्तियों की जो लड़ी है उसी की वह श्रेष्ठतम लड़ी हैं।

लेखक- लक्ष्मी नारायण

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

[गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरित मानस में रावण-अंगद संवाद के अन्तर्गत यह प्रेरक प्रसंग आता है। जहाँ गोस्वामी जी ने अनेक दुर्गुणों की चर्चा कर उनसे ग्रस्त जीवित व्यक्ति को भी मृतक् समान माना है। सोशल मीडिया से यह आलेख पाठकों के लाभार्थ यहाँ दे रहे हैं।......सम्पादक]

राम-रावण युद्ध चल रहा था, तब अंगद ने रावण से कहा- तू तो मरा हुआ है, मरे हुए को मारने से क्या फायदा?

रावण बोला- मैं जीवित हूँ, मरा हुआ कैसे?

अंगद बोले, सिर्फ साँस लेने वालों को जीवित नहीं कहते- साँस तो लुहार की धौंकनी भी लेती है!

तब अंगद ने १४ प्रकार के लोग गिनाये जो शरीर से भले ही जीवित हों पर मृतक् सामान ही हैं-

जो अस करौं तदपि न बड़ाई। मुएहि बधें नहि कछु मनुसाई।
कौल कामबस कृपिन विमूढ़ा। अतिदरिद्र अजसी अतिबूढ़ा।।
सदारोगबस संतत क्रोधी। बिष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी।।
तनुपोषक निंदक अघखानी। जीवत सव सम चौदह प्रानी।।

(रामचरित मानस , लंका काण्ड)

१. कामवश : जो व्यक्ति अत्यन्त भोगी हो, कामवासना में लिप्त रहता हो, जो संसार के भोगों में उलझा हुआ हो, वह मृत समान है। जिसके मन की इच्छाएँ कभी खत्म नहीं होतीं और जो प्राणी सिर्फ अपनी इच्छाओं के अधीन होकर ही जीता है, वह मृत समान है। वह अध्यात्म का सेवन नहीं करता है, सदैव वासना में लीन रहता है।

२. वाममार्गी : जो व्यक्ति पूरी दुनिया से उल्टा चले, जो संसार की हर बात के पीछे नकारात्मकता खोजता हो, सत्य वैज्ञानिक नियमों, परम्पराओं, धर्म एवं लोक व्यवहार के खिलाफ चलता हो, वह वाममार्गी कहलाता है। ऐसे काम करने वाले लोग मृत समान माने गए हैं।

३. कंजूस : अति कंजूस व्यक्ति भी मरा हुआ होता है। जो व्यक्ति धर्म कार्य करने में, आर्थिक रूप से किसी कल्याणकारी कार्य में हिस्सा लेने में हिचकता हो, दान एवं यज्ञ करने से बचता हो, ऐसा आदमी भी मृतक समान ही है।

४. अति दरिद्र : गरीबी सबसे बड़ा श्राप है। जो व्यक्ति धन, आत्म-विश्वास, सम्मान और साहस से हीन हो, वह भी मृत ही है। अत्यन्त दरिद्र भी मरा हुआ है। गरीब आदमी को दुत्कारना नहीं चाहिए, क्योंकि वह पहले ही मरा हुआ होता है। दरिद्र मानकर उनकी मदद करनी चाहिए। उनके प्रति करुणा का भाव रखना चाहिए।

५. विमूढ़ : अत्यन्त मूढ़ यानी मूर्ख व्यक्ति भी मरा हुआ ही होता है। जिसके पास बुद्धि-विवेक न हो, जो खुद निर्णय न ले सके, यानि हर काम को समझने या निर्णय लेने में किसी अन्य पर आश्रित हो, ऐसा व्यक्ति भी जीवित होते हुए मृतक समान ही है, मूढ़ अध्यात्म को नहीं समझता।

६. अजसि : जिस व्यक्ति को संसार में बदनामी मिली हुई है, वह भी मरा हुआ है। जो घर-परिवार, कुटुम्ब-समाज, नगर-राष्ट्र, किसी भी ईकाई में सम्मान नहीं पाता, वह व्यक्ति भी मृत समान ही होता है।

७. सदा रोगवश : जो व्यक्ति निरन्तर रोगी रहता है, वह भी मरा हुआ है। स्वस्थ शरीर के अभाव में मन विचलित रहता है। नकारात्मकता हावी हो जाती है। व्यक्ति मृत्यु की कामना में लग जाता है। जीवित होते हुए भी रोगी व्यक्ति जीवन के आनन्द से वंचित रह जाता है।

८. अति बूढ़ा : अत्यन्त वृद्ध व्यक्ति भी मृत समान होता है, क्योंकि वह अन्य लोगों पर आश्रित हो जाता है। शरीर और बुद्धि, दोनों अक्षम हो जाते हैं। ऐसे में कई बार वह स्वयं और उसके परिजन ही उसकी मृत्यु की कामना करने लगते हैं, ताकि उसे इन कष्टों से मुक्ति मिल सके।

९. सतत क्रोधी : २४ घण्टे क्रोध में रहने वाला व्यक्ति भी मृतक समान ही है। ऐसा व्यक्ति हर छोटी-बड़ी बात पर क्रोध

करता है। क्रोध के कारण मन और बुद्धि दोनों ही उसके नियंत्रण से बाहर होते हैं। जिस व्यक्ति का अपने मन और बुद्धि पर नियंत्रण न हो, वह जीवित होकर भी जीवित नहीं माना जाता। पूर्व जन्म के संस्कार लेकर यह जीव क्रोधी होता है। क्रोधी अनेक जीवों का घात करता है और नरकगामी होता है।

१०. अघखानी : जो व्यक्ति पाप कर्मों से अर्जित धन से अपना और परिवार का पालन-पोषण करता है, वह व्यक्ति भी मृत समान ही है। उसके साथ रहने वाले लोग भी उसी के समान हो जाते हैं। हमेशा मेहनत और ईमानदारी से कमाई करके ही धन प्राप्त करना चाहिए। पाप की कमाई पाप में ही जाती है और पाप की कमाई से नीच गोत्र, निगोद की प्राप्ति होती है।

११. तनु पोषक : ऐसा व्यक्ति जो पूरी तरह से आत्म संतुष्टि और खुद के स्वार्थों के लिए ही जीता है, संसार के किसी अन्य प्राणी के लिए उसके मन में कोई संवेदना न हो, ऐसा व्यक्ति भी मृतक समान ही है। जो लोग खाने-पीने में, वाहनों में स्थान के लिए, हर बात में सिर्फ यही सोचते हैं कि सारी चीजें पहले हमें ही मिल जाएँ, बाकी किसी अन्य को मिलें न मिलें, वे मृत समान होते हैं। ऐसे लोग समाज और राष्ट्र के लिए अनुपयोगी होते हैं। शरीर को अपना मानकर उसमें रत रहना मूर्खता है, क्योंकि यह शरीर विनाशी है, नष्ट होने वाला है।

१२. निन्दक : अकारण निन्दा करने वाला व्यक्ति भी मरा हुआ होता है। जिसे दूसरों में सिर्फ कमियाँ ही नजर आती हैं, जो व्यक्ति किसी के अच्छे काम की भी आलोचना करने से नहीं चूकता है, ऐसा व्यक्ति जो किसी के पास भी बैठे, तो सिर्फ किसी न किसी की बुराई ही करे, वह व्यक्ति भी मृत समान होता है। परनिन्दा करने से नीच गोत्र का बंध होता है।

१३. परमात्म विमुख : जो व्यक्ति ईश्वर यानि परमात्मा का विरोधी है, वह भी मृत समान है। जो व्यक्ति यह सोच लेता है कि कोई परमतत्व है ही नहीं, हम जो करते हैं, वही होता है, संसार हम ही चला रहे हैं, जो परमशक्ति में आस्था नहीं रखता, ऐसा व्यक्ति भी मृत माना जाता है।

१४. श्रुति सन्त विरोधी : जो वेदादि सत्य सत्य आर्ष शास्त्रों एवं सन्त पुरुषों का विरोधी है, वह भी मृत समान है। श्रुति और सन्त, समाज में अनाचार पर नियंत्रण (ब्रेक) का काम करते हैं। अगर गाड़ी में ब्रेक न हो, तो कहीं भी गिरकर एक्सीडेंट हो सकता है। वैसे ही समाज को सन्तों की जरूरत होती है, वरना समाज में अनाचार पर कोई नियंत्रण नहीं रह जाएगा।

अतः मनुष्य को उपरोक्त चौदह दुर्गुणों से यथासम्भव दूर रहकर स्वयं को मृतक् समान जीवित रहने से बचाना चाहिए।

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

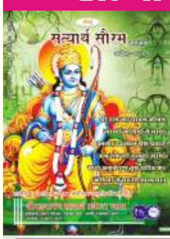

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

UN में शामिल हुई हिंदी

संयुक्तराष्ट्र संघ में अभी भी दुनिया की सिर्फ छह भाषाएँ आधिकारिक रूप से मान्य हैं। अंग्रेजी, फ्रांसीसी, चीनी, रूसी, हिस्पानी और अरबी! इन सभी छह भाषाओं में से एक भी भाषा ऐसी नहीं है, जो बोलने वालों की संख्या, लिपि, व्याकरण, उच्चारण और शब्द-संख्या की दृष्टि से हिन्दी का मुकाबला कर सकती हो। इस विषय की विस्तृत व्याख्या मेरी पुस्तक 'हिन्दी कैसे बने विश्वभाषा?' में मैंने की है। यहाँ तो मैं इतना ही बताना चाहता हूँ कि हिन्दी के साथ भारत में ही नहीं, विश्व मंचों पर भी घनघोर अन्याय हो रहा है, लेकिन हल्की-सी खुशखबर अभी-अभी आई है। संयुक्तराष्ट्र संघ की महासभा ने अपने सभी 'जरुरी कामकाज' में अब उक्त छह आधिकारिक भाषाओं के साथ हिन्दी, उर्दू और बांग्ला के प्रयोग को भी स्वीकार कर लिया है। ये तीन भाषाएँ भारतीय भाषाएँ हैं, हालांकि पाकिस्तान और बांग्लादेश को विशेष प्रसन्नता होनी चाहिए, क्योंकि बांग्ला और उर्दू उनकी राष्ट्रभाषाएँ हैं। यह खबर अच्छी है लेकिन अभी तक यह पता नहीं चला है कि संयुक्तराष्ट्र के किन-किन कामों को 'जरुरी' मानकर उनमें इन तीनों भाषाओं का प्रयोग होगा। क्या उसके सभी मंचों पर होनेवाले भाषणों, उसकी रपटों, सभी प्रस्तावों, सभी दस्तावेजों, सभी कार्रवाइयों आदि का अनुवाद इन तीनों भाषाओं में होगा? क्या इन तीनों भाषाओं में भाषण देने और दस्तावेज पेश करने की अनुमति होगी? ऐसा होना मुझे मुश्किल लग रहा है लेकिन धीरे-धीरे वह दिन आ ही जाएगा जबकि हिन्दी संयुक्तराष्ट्र की सातवीं आधिकारिक भाषा बन जाएगी। हिन्दी के साथ मुश्किल यह है कि वह अपने घर में ही नौकरानी बनी हुई है तो उसे न्यूयार्क में महारानी कौन बनाएगा? हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं और हिन्दी देश में अधमरी (अर्धमृत) पड़ी हुई है। कानून-निर्माण, उच्च शोध, विज्ञान विषयक अध्यापन और शासन-प्रशासन में अभी तक उसे उसका उचित स्थान नहीं मिला है। जब १९७५ में पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में हुआ था, तब भी मैंने यह मुद्दा उठाया था और २००३ में सूरिनाम के विश्व हिन्दी सम्मेलन में मैंने हिन्दी को सं.रा. की आधिकारिक भाषा बनाने का प्रस्ताव पारित करवाया था। १९९९ में भारतीय प्रतिनिधि के नाते संयुक्तराष्ट्र में मैंने अपना भाषण हिन्दी में देने की कोशिश की लेकिन मुझे अनुमति नहीं मिली। केवल अटलजी और नरेन्द्र मोदी को अनुमति मिली, क्योंकि हमारी सरकार को उसके लिए कई पापड़ बेलने पड़े थे। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने भरसक कोशिश की कि हिन्दी को संयुक्तराष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा मिले लेकिन कोई मुझे यह बताए कि हमारे कितने भारतीय नेता और अफसर वहाँ जाकर हिन्दी में अपना काम-काज करते हैं? जब देश में सरकार का सारा महत्वपूर्ण काम-काज (वोट माँगने के अलावा) अंग्रेजी में होता है तो संसार में वह अपना काम-काज हिन्दी में कैसे करेगी? अंग्रेजी की इस गुलामी के कारण भारत दुनिया की अन्य समृद्ध भाषाओं का भी लाभ लेने से खुद को वंचित रखता है। देखें, शायद संयुक्तराष्ट्र की यह पहल भारत को अपनी भाषायी गुलामी से मुक्त करवाने में कुछ मददगार साबित हो जाए!

डॉ.वेद प्रताप वैदिक,दिल्ली

(डॉ. वैदिक भारतीय भाषा सम्मेलन के अध्यक्ष हैं)

पैर हो जाते हैं सुन्न?
जानें ब्लड सर्कुलेशन बढ़ाने के 5 उपाय

पैरों के जरिए पूरे शरीर को संतुलित रखने में मदद मिलती है इसलिए पैरों का रक्त संचार सही होना जरूरी है। पैर में रक्त संचार कम होने के कारण पैरों में झुनझुनी, पैरों में सुन्नपन, चुभन जैसा दर्द, पैर की नसों में दर्द और मसल्स क्रैम्प्स आदि लक्षण नजर आ सकते हैं। इन लक्षणों से बचने के लिए आपको पैरों का रक्त संचार बढ़ाना होगा। पैरों के रक्त संचार में सुधार करने के लिए आप कुछ आसान उपायों को अपना सकते हैं जिनके बारे में हम आगे बात करेंगे। इस विषय पर बेहतर जानकारी के लिए हमने लखनऊ के 'केयर इंस्टीट्यूट ऑफ लाइफ साइंसेज' की एमडी फिजिशियन डॉ. सीमा यादव से बात की।

१. नमक की मात्रा कम करें

पैरों में रक्त संचार बढ़ाने के लिए नमक की मात्रा कम कर दें। शरीर में सोडियम की मात्रा बढ़ने के कारण धमनियों पर दबाव पड़ता है और ब्लड सर्कुलेशन बिगड़ता है। आपको स्ट्रीट फूड, पैक्ड फूड का सेवन नहीं करना चाहिए। इनमें सोडियम की मात्रा ज्यादा होती है। शरीर से नमक को बाहर निकालने के लिए आप पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन करें।

२. रोजाना पैदल चलें

शरीर और पैरों में रक्त संचार बढ़ाने के लिए आप रोजाना पैदल चलें। आपको ५ से ६ हजार कदम यानी २ से ३ किलोमीटर चलने से शुरुआत करनी चाहिए। धीरे-धीरे आप कदम बढ़ा सकते हैं। वॉक करने से ठीक पहले और बाद में कुछ भी खाने से बचें। शरीर के लिए सुबह टहलना ज्यादा फायदेमन्द माना जाता है।

३. पोजीशन बदलते रहें

पैरों में रक्त संचार बढ़ाने के लिए एक ही पोजीशन में ज्यादा देर रहने की गलती न करें। ज्यादा देर बैठने या खड़े रहने के कारण रक्त एक जगह इकट्ठा हो जाता है। घण्टे भर से ज्यादा एक ही मुद्रा में हैं, तो कुछ मिनट चलें। ऑफिस में काम करते समय भी आपको एक ही पोजीशन में बैठे रहने से बचना चाहिए। अगर ट्रैवल कर रहे हैं, तो पैरों को सर्कुलर मोशन में घुमाएँ। इससे पैरों का रक्त संचार बेहतर रहेगा।

४. वजन कम करने के उपाय

पैर में ब्लड सर्कुलेशन को बेहतर करने के लिए आपको वजन कम करना चाहिए। ज्यादा वजन के कारण भी पैर में रक्त संचार बिगड़ सकता है। ज्यादा वजन के कारण पैर की नसों पर दबाव पड़ता है और दर्द महसूस होता है। वजन कम करने के उपाय की बात करें, तो अपनी डाइट में फाइबर रिच फूड्स को शामलि करें। रोजाना वॉक, ब्रिस्क वॉक, कार्डियो कसरत और जागिंग आदि को अपने रुटीन में शामिल करें।

५. सब्जियों का सेवन करें

शरीर और पैरों में रक्त संचार बेहतर करने के लिए आप ताजी सब्जियों का सेवन करें। हरी पत्तेदार सब्जियाँ खाना ब्लड सर्कुलेशन बढ़ाने में मदद करता है पर मानसून के दौरान पत्तेदार सब्जियों का सेवन करने से बचें। इस मौसम में हम अन्य मौसमी सब्जियाँ और फलों का सेवन कर सकते हैं। सब्जियों में आयरन की मात्रा अच्छी होती है। शरीर में आयरन बढ़ने से रेड ब्लड सेल्स बढ़ते हैं जिससे रक्त संचार में सुधार हो सकता है।

इन आसान टिप्स को अपनाकर आप पैरों का रक्त संचार बढ़ा सकते हैं। खराब रक्त संचार के लक्षण नजर आने पर डॉक्टर से सलाह भी लेनी चाहिए।

साभार- only my health

कथा सरित

पुरुषार्थ की महत्ता

एक गाँव में दो मित्र नकुल और सोहन रहते थे। नकुल बहुत धार्मिक था और भगवान को बहुत मानता था। जबकि सोहन बहुत मेहनती था। एक बार दोनों ने मिलकर एक बीघा जमीन खरीदी। जिससे वह बहुत फसल ऊगा कर अपना घर बनाना चाहते थे।

सोहन तो खेत में बहुत मेहनत करता लेकिन नकुल कुछ काम नहीं करता बल्कि मन्दिर में जाकर भगवान से अच्छी फसल के लिए प्रार्थना करता था। इसी तरह समय बीतता गया। कुछ समय बाद खेत की फसल पक कर तैयार हो गयी।

जिसको दोनों ने बाजार ले जाकर बेच दिया और उनको अच्छा पैसा मिला। घर आकर सोहन ने नकुल को कहा कि इस धन का ज्यादा हिस्सा मुझे मिलेगा क्योंकि मैंने खेत में ज्यादा मेहनत की है।

यह बात सुनकर नकुल बोला नहीं धन का तुमसे ज्यादा हिस्सा मुझे मिलना चाहिए क्योकि मैंने भगवान से इसकी प्रार्थना की तभी हमको अच्छी फसल हुई। भगवान के बिना कुछ सम्भव नहीं है। जब वह दोनों इस बात को आपस में नहीं सुलझा सके तो धन के बंटवारे के लिए दोनों गाँव के मुखिया के पास पहुँचे।

मुखिया ने दोनों की सारी बात सुनकर उन दोनों को एक-एक बोरा चावल का दिया जिसमें कंकड़ मिले हुए थे। मुखिया ने कहा कि कल सुबह तक तुम दोनों को इसमें से चावल और कंकड़ अलग करके लाने हैं तब मैं निर्णय करूँगा कि इस धन का ज्यादा हिस्सा किसको मिलना चाहिए?

दोनों चावल की बोरी लेकर अपने घर चले गए। सोहन ने रात भर जागकर चावल और कंकड़ को अलग किया। लेकिन नकुल चावल की बोरी को लेकर मन्दिर में गया और भगवान से चावल में से कंकड़ अलग करने की प्रार्थना की।

अगले दिन सुबह सोहन जितने चावल और कंकड़ अलग कर सका उसको ले जाकर मुखिया के पास गया। जिसे देखकर मुखिया खुश हुआ। नकुल वैसी की वैसी बोरी को ले जाकर मुखिया के पास गया।

मुखिया ने नकुल को कहा कि दिखाओ तुमने कितने चावल साफ किये हैं? नकुल ने कहा कि मुझे भगवान पर पूरा भरोसा है की सारे चावल साफ हो गए होंगे। जब बोरी को खोला गया तो चावल और कंकड़ वैसे के वैसे ही थे।

जमींदार ने नकुल को कहा की भगवान भी तभी सहायता करते हैं जब तुम मेहनत करते हो। जमींदार ने धन का ज्यादा हिस्सा सोहन को दिया। इसके बाद नकुल भी सोहन की तरह खेत में मेहनत करने लगा और अबकी बार उनकी फसल पहले से भी अच्छी हुई।

साभार- अन्तर्जाल

समाचार

जवाहर कैम्प हनुमान मन्दिर, कीर्ति नगर क्लस्टर में सामूहिक हवन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मार्गदर्शन में, यज्ञ उत्थान मानव कल्याण समिति के तत्वावधान में घर-घर यज्ञ, हर घर यज्ञ प्रकल्प द्वारा जवाहर

कैम्प हनुमान मन्दिर, कीर्ति नगर क्लस्टर में सामूहिक हवन रखा गया, ज्यादा भीड़ और हवन में बैठने की जगह ना होने के कारण बहुत से यज्ञ प्रेमियों ने खड़े होकर अपनी बारी की प्रतीक्षा कर यज्ञ में अपनी आहुतियाँ प्रदान कीं। यह दृश्य देखकर इस बात की प्रसन्नता हुई कि जिस उद्देश्य को लेकर हमारे दिल्ली सभा के अधिकारियों ने हमें यह जिम्मेदारी दी उस उद्देश्य की ओर हम अग्रसर हो रहें हैं, जवाहर कैम्प की हमारी यज्ञ समिति के पुरुष और महिला टीम के अधिकारियों का पुष्प माला पहना कर आर्य समाज की ओर से सम्मान किया गया। यज्ञ के उपरान्त सभी को सहयोग प्रकल्प की ओर से वस्त्र वितरित किये गये, सभी कॉलोनी के लोगों के लिए समाजसेवी श्री प्रेम अरोड़ा जी की ओर से प्रसाद (समोसों) की भी व्यवस्था की गई।

चरित्र निर्माण एव आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का समापन

बीते दिनों आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का चरित्र निर्माण एव आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ। आर्य समाज जीके-१ में आयोजित कार्यक्रम में दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों से आयी आर्य वीरांगनाओं ने भाग लिया। आठ दिन तक चले इस शिविर में

वीरांगनाओं को विभिन्न सत्रों में चरित्र निर्माण, वैदिकधर्म, आत्मरक्षा, व्यायाम आदि विषयों के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। समापन समारोह में मुंजाल शोवा ग्रुप के चेयरमैन योगेश मुंजाल, ऋषि जन्मभूमि ट्रस्ट टंकारा के महामंत्री अजय सहगल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री बृहस्पती आर्य, डॉ. रचना आर्य, कीर्ति शर्मा आदि उपस्थित रहे। इस के इलावा आर्य समाज जीके-१ के अधिकारी और सदस्य भी काफी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में वीरांगनाओं द्वारा व्यायाम आदि के प्रदर्शन से आये दर्शकों का दिल जीत लिया। मंच संचालन अमृता आर्य द्वारा किया गया।

विनम्र श्रद्धांजलि

स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी जी द्वारा स्थापित विश्व विख्यात आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा के अधिष्ठाता, वैदिक विद्वान् आचार्य देवराज शास्त्री जी का शुक्रवार, दिनांक १५ जुलाई २०२२ को सायंकाल आकस्मिक निधन हो गया।

इस दु:खद समाचार को सुनते ही आर्यजनों में शोक की लहर दौड़ पड़ी। एटा क्षेत्र के साथ-साथ उनके हजारों शिष्य जो आज उच्च पदों पर कार्यरत हैं उनका गुरुकुल में पहुँचना प्रारम्भ हो गया।

उनका अंतिम संस्कार शनिवार, दिनांक, १६ जुलाई २०२२ को आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा में किया गया।

आचार्य जी ने अपना पूरा जीवन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं एवं आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के साथ आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा को समर्पित कर दिया।

हम ऐसे महान् तपस्वी विद्वान् आचार्य देवराज शास्त्री जी को अश्रुपूरित विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। - मेधाव्रत देवराज शास्त्री

महर्षि दयानन्द छात्रावास का उद्घाटन एवं सामवेद पारायण यज्ञ तथा सत्संग समारोह का आयोजन

पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ के तत्वावधान में दिनांक १३ से

१५ जुलाई २०२२ तक महर्षि दयानन्द छात्रवास का उद्घाटन एवं सामवेद पारायण यज्ञ तथा सत्संग समारोह का आयोजन ग्राम सेवाश्रम न्यास के अध्यक्ष सोमदेव शास्त्री की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। त्रिदिवसीय कार्यक्रम में छात्रवास का उद्घाटन, सामवेद पारायण यज्ञ तथा नवीन छात्राओं के प्रवेश आदि के कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें नगर के आर्यजनों के अतिरिक्त आमजन एवं देश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे आर्यजन उपस्थित थे।

इस अवसर ग्राम सेवाश्रम न्यास के अध्यक्ष-सोमदेव शास्त्री, मंत्री-श्री देवेन्द्र शेखावत, गुरुकुल संचालन समिति के संरक्षक प्रमोद राघव, संचालन समिति के अध्यक्ष-श्री विक्रम आंजना, मंत्री-श्रीमती सरला गुप्ता, कोषाध्यक्ष-श्री कुंजीलाल पाटीदार ने अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम में प्रमुख सान्निध्य रूपसिंह शक्तावत, गिरिराज गिल, जीववर्द्धन शास्त्री आदि न्यासियों का प्राप्त हुआ।

प्रयागराज कुम्भ के ऐतिहासिक स्थल नागवासुकी मंदिर वर्ष १८७० के महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रवास स्मृति स्थल का उद्घाटन

११ जून २०२२ को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गंगा नदी के किनारे प्रसिद्ध नागवासुकि मन्दिर, प्रयागराज में सन् १८७० में प्रवास काल की याद में स्मृति स्थल का उद्घाटन हुआ। डलहौजी (हिमाचलप्रदेश) निवासी श्री अजय सहगल (भारतीय रक्षा सम्पदा अधिकारी) के प्रयासों से १५२ वर्षों के बाद यह ऐतिहासिक कार्य हुआ। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने श्री अजय सहगल को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ दीं और उनके प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी की यह स्मृति एक नया अध्याय लिखेगी।

श्री अजय सहगल ने कहा कि स्मृति स्थल अब एक वैदिक प्रचार केन्द्र के रूप में उभरेगा। इस अवसर पर वाराणसी विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष श्रीमती ईशा दुहन जी (आईएएस) एवं वैदिक विद्वान् डॉ. ज्वलन्त शास्त्री जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर आर्यजनों में प्रमुख रूप से राकेश केसरवानी जी, सद्गुरु जी, प्रमोद आर्य जी एवं अन्य अनेक स्थानीय आर्य समाजों के कार्यकर्त्ता व अधिकारी उपस्थित रहे।

ज्ञातव्य है कि श्री अजय सहगल जी आजकल प्रयागराज के भारतीय रक्षा सम्पदा विभाग के अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। इस ऐतिहासिक कार्य के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से समस्त सहयोगी आर्यजनों और विशेष रूप से श्री अजय सहगल जी को हार्दिक शुभकामनाँ एवं बधाई।

आर्य बा.उ.मा.वि. अलवर की छात्राओं ने बढ़ाया गौरव

आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा संचालित आर्य बा.उ.मा.वि.अलवर की छात्राओं ने १०वीं एवं १२वीं की परीक्षाओं में उत्तम अंक प्राप्त कर आर्य समाज का गौरव बढ़ाया। १२वीं विज्ञान वर्ग में स्वाती शर्मा ने ९१ प्रतिशत, मुस्कान शर्मा ने ८५ प्रतिशत, कला वर्ग में सीमा सैनी ने ९० प्रतिशत, पलक सोनी ने ८८ प्रतिशत, १०वीं कक्षा में खुशी ने ९१.१७ प्रतिशत, शीतल महिपाल ने ९०.५० प्रतिशत अंक प्राप्त किए। इनके अतिरिक्त विद्यालयों की अनेक छात्राओं ने ८० प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। इसके लिए श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार विद्यालय की छात्राओं तथा प्रबन्धन को बधाई सम्प्रेषित करते हुए विद्यालय की सतत् उन्नति की कामना करता है।

आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर के चुनाव संपन्न

दिनांक ३ जुलाई को आर्यसमाज हिरणमगरी की साधारण सभा की बैठक आयोजित की गई। इस सभा में निर्वाचन अधिकारी श्रीमान्

प्रकाश जी श्रीमाली के द्वारा अन्तरंग सभा के चुनाव सम्पन्न कराये गए। निम्न सदस्यों का निर्वाचन हुआ।

श्री भंवर लाल आर्य-प्रधान, श्री कृष्ण कुमार सोनी एवं श्री संजय शांडिल्य-उपप्रधान, श्रीमती ललिता मेहरा एवं आचार्य (वैद्य) श्री वेदमित्र आर्य-मंत्री, श्रीमती सरला गुप्ता-उपमंत्री, श्री रमेश चन्द्र जायसवाल-कोषाध्यक्ष, श्री हजारी लाल आर्य- प्रचार मंत्री, श्री सुभाष कोठारी-पुस्तकालयाध्यक्ष, अन्तरंग सदस्य- श्रीमती शारदा गुप्ता, प्रो. (डॉ.) अमृत लाल तापड़िया, श्री निरंजन नेभनानी, श्रीमती चन्द्रकला यादव, श्री अनन्तदेव जी शर्मा, आतंरिक लेखा निरीक्षक-श्री अम्बा लाल सनाढ्य, मानद निदेशक (दयानन्द कन्या विद्यालय)-श्रीमती पुष्पा सिन्धी।

- ललिता मेहरा, मंत्री

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०३/२२ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०३/२२ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री पुरुषोत्तम मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनिता सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती रूपा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री प्रधान जी आर्यसमाज; बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), डॉ. राजबाला कादयाल; करनाल (हरियाणा), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री फूलचन्द यादव; गाजियाबाद (उ.प्र.), श्री गोपाल राव; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री आर.सी. आर्य; कोटा (राज.), श्रीमती कमल कान्ता सहगल; पंचकूला (हरियाणा), श्री नन्दलाल जी आर्य; बेतिया (बिहार)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य– पहेली के नियम **पृष्ठ 24 पर अवश्य पढ़ें।**

सत्यार्थ-पीयूष

ईश्वर और ईश्वरकृत पुस्तक (कसौटी)

यहाँ हम पाठकों से यह भी कहना चाहेंगे कि पाश्चात्य संस्कृतज्ञ वेदों में लौकिक इतिहास मानते हैं। लौकिक इतिहास जिनमें है, ऐसे ग्रन्थों को ईश्वर प्रणीत कहा ही नहीं जा सकता। जैसाकि हमने ऊपर कहा है। पाश्चात्यों की बात तो जाने दें, दुर्भाग्य तो यह है कि वेद को ईश्वर प्रणीत मानने वाले, स्वतः प्रमाण मानने वाले भारतीय नवीन आचार्य, वेदभाष्यकार सायणादि भी अनेक स्थलों पर वेद में लौकिक इतिहास स्वीकार कर लेते हैं।

वेद में इतिहास नहीं

शब्द इति चेन्नातः प्रभवात् प्रत्यक्षानुमानाभ्याम्॥

– वेदान्त दर्शन १/३/२८

यदि कहो कि वेद में अनित्य व्यक्तियों के नाम आने से वह अनित्य इतिहास वाला है, तब ठीक नहीं, क्योंकि वेद ही में से लेकर ऋषियों ने पदार्थों के नाम रखे हैं।

ऐसा करते समय वे यह भूल जाते हैं कि वेद में लौकिक इतिहास स्वीकार करते ही वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानने की उनकी स्वयं की प्रतिज्ञा भंग हो जाती है। ऐसी दशा में हम सुधी पाठकों से निवेदन करना चाहेंगे कि वेद में 'लौकिक इतिहास लेशमात्र भी नहीं है' इस तथ्य को, वेद के प्राचीन भाष्यकारों की शैली को पुनः प्रस्तुत कर, स्थापित करने का श्रेय युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को जाता है। यह बड़ा गम्भीर व विस्तृत विषय है। पर पाठकों को हम अति संक्षेप में यही कहना चाहेंगे कि यह सत्य है कि वेद का राम, कृष्ण, अर्जुन, सीता आदि नाम से तथा गंगा, सरस्वती आदि से किंचित मात्र भी सम्बन्ध नहीं है वरन् धात्वज अर्थों के अनुसार प्रकरणानुसार इनका अर्थ वहाँ भिन्न ही है।

उदाहरण स्वरूप देखें-

अहश्चकृष्णमहरर्जुनं च, विंवर्तते रजसी वेद्यामी।

– ऋग्वेद ६/९/६

यहाँ पर कृष्ण का अर्थ रात्रि तथा अर्जुन का अर्थ दिन है तथा रात-दिन का वर्णन है। ईश्वरीय ज्ञान में यह ज्ञान स्वाभाविक है। कुछ लोग कह सकते हैं कि स्वामी दयानन्द ने ऐसे अर्थ मनमाने तरीके से प्रस्तुत कर दिये हैं इस पर हमारा निवेदन हैं कि ऐसा नहीं है। प्राचीन वेदभाष्यकारों की शैली का अनुकरण करते हुए स्वामी दयानन्द जी महाराज ने प्रामाणिक तौर पर वेदार्थ प्रस्तुत किये हैं। स्वाध्यायशील, जिज्ञासु पाठक कृपया महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा वेदभाष्य पढ़ने का श्रम करें उन्हें सब कुछ स्पष्ट हो जावेगा। यह भी जान लेना चाहिये कि दयानन्द के समकालीन विद्वान् जो सायणादि को अपना आदर्श मानते थे, किसी भी शास्त्रार्थ में महर्षि दयानन्द कृत अर्थों का खण्डन करने में असमर्थ रहे। कारण कि महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित सत्य, सत्य और केवल सत्य है।

वेद में संज्ञावाचक शब्द लौकिक इतिहास के परिचायक हैं ऐसा मानने वाले विचार करें कि निम्न उदाहरणों में इतिहास की संगति कैसे बैठेगी? अथर्ववेद के निम्न मंत्र के अर्थ पर विचार करें।

वेद ईश्वरीय ज्ञान

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवानामुत मानुषाणाम्॥

– अथर्ववेद ४/३०/३

मैं (ईश्वर) साधारण तथा देवतुल्य मनुष्यों के प्रति इस प्रीतिपूर्वक सेवा योग्य ज्ञान (वेद) को देता हूँ।

इन्द्र व सीता को ऐतिहासिक माना जावे तो इसके अर्थ में इतिहास की संगति कैसे लेगेगी? ऐतिहासिक अर्थ होगा 'इन्द्र सीता को पकड़ ले' पाठक विचार करें, रामायण में ऐसा वर्णन कहाँ है? अतः स्पष्ट है ऐतिहासिक पात्र मानकर वेद मंत्रों के शुद्ध अर्थ नहीं हो सकते। वस्तुतः यहाँ इन्द्र का अर्थ किसान है तथा सीता का अर्थ भूमि है। एक और उदाहरण देखें-

कृष्णायाः पुत्रोर्जुनो। – अथर्ववेद १३/३/२६

इस मंत्र में इतिहास मानें तो अर्थ की संगति कैसे होगी? क्योंकि इसका अर्थ होगा- अर्जुन, कृष्णा (द्रौपदी) का पुत्र है। पाठक विचार करें कि यह किस महाभारत में लिखा है?

वस्तुतः यहाँ कृष्णा का अर्थ रात्रि तथा अर्जुन का अर्थ दिन है। वेद में जगह जगह प्राकृतिक घटनाओं तथा पदार्थों के सम्बन्ध में अलंकारिक वर्णन प्राप्त होते हैं।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

CARRY ON MISSY
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
Chitrangada Singh
Over 85 shades
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2022 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

आता-जाता वह है कि जो एकदेशीय हो, और जो अचल, अदृश्य, जिसके बिना एक परमाणु भी खाली नहीं है, उसका अवतार कहना जानो वन्ध्या के पुत्र का विवाह कर उसके पौत्र के दर्शन करने की बात कहना है।

- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३०७

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर